Chapter-3

अध्याय : ३

मन्नू भंडारी
के
कथा साहित्य
में
सामाजिक एवं पारिवारिक
समस्याएँ

प्रास्ताविक :

उपन्यास एक यथार्थ धर्मी विधा है, अत: मानव-जीवन एवं समाज के प्रश्नों से उसका साक्षात्कार होना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। पूर्व-प्रेमचंदकाल के उपन्यासों में भी पं. श्रद्धाराम फुल्लौरी, पं. बालकृष्ण भट्ट, लाला श्री निवास दास, मन्नन द्विवेदी, मेहता लज्जाराम शर्मा, प्रभृति के उपन्यासो में मानव-जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति हमें मिलती है। प्रेमचंदयुग के उपन्यासों का तो सीधा सरोकार ही इन समस्याओं से था। इसीलिए तो उनको समस्यामूलक उपन्यास की संज्ञा मिली थी। प्रेमचंदोत्तर काल में अनेक औपन्यासिक प्रवृत्तियाँ सामने आयीं। उनके रूपबंध भिन्न हो सकते हैं, परंतु कोई-न-कोई समस्या तो उनसे संलग्नित रहती ही हैं। मानव-जीवन एवं समाज से सम्बन्ध में समस्याएँ कितने ही प्रकार की हो सकती हैं। यथा-सामाजिक समस्या, पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या आदि-आदि। प्रस्तुत अध्याय में मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में जिन सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं को अनुस्यूत किया गया

है उन पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण से विचार करने का हमारा उपक्रम है।

सामाजिक समस्याएँ :

समाज शब्द का प्रयोग साधरणत: जनसमुदाय के लिए किया जाता है। शब्द कोशों में उसका अर्थ समूह, दल, संघ आदि दिया गया है। लगभग अधिकतर समाजशास्त्री समाज शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था के हेतु करते हैं। रयूटर ने कहा है-" जिस प्रकार जीवन एक वस्तु नहीं है बल्कि जीवित रहने की प्रक्रिया है; उसी तरह समाज एक वस्तु नहीं है; अपितु सम्बन्ध स्थापित करने की एक प्रक्रिया है।"[१]

समाज में परिस्थितिवश अनेक परिवर्तन आते रहते हैं। जब ये सामाजिक परिवर्तन सामाजिक मूल्यों को तोड़ने लगते हैं उसी समय सामाजिक समस्या का जन्म होता है। समाज व्यक्ति के समुचित विकास के हेतु अस्तित्व में आया है। राबर्ट निसबेट ने सामाजिक समस्या के बारे में लिखा है-" सामाजिक समस्या वह व्यवहार पद्धति है। जिसे समाज का बड़ा भाग एक या एक से अधिक अनुमोदित व स्वीकृत प्रतिमानों का उल्लंघन मानता है।"[२]

समाजशास्त्र अवधारणा कोश में सामाजिक समस्या को परिभाषित करते हुए लिखा गया है -" ऐसी कोई भी अवांछित तथा आपत्ति जनक दशा, स्थिति अथवा व्यवहार प्रतिमान जो किसी समाज के अधिसंख्य व्यक्तियों द्वारा असहनीय एवं निन्दनीय माने जाते है तथा जिसके सुधार एवं निदान के लिए सामूहिक क्रिया की आवश्यकता महसूस की जाती है , सामाजिक समस्या कहलाती है। सामाजिक समस्याएँ व्यवहारों के टूटने, भंग होने अथवा विचलन की शक्ति का परिचायक है। अपराध, अपचार वेश्या-वृत्ति, भिक्षावृत्ति, बेरोजगारी आदि सामाजिक समस्याओं के कुछ उदाहरण है।"

अत: हमें सामूहिक रूप से इनके विरूद्ध कार्य करने व चेतना लाने की जरूरत है ताकि बढते हुए असंतोष को दूर किया जा सके। सामाजिक असंतोष सामाजिक समस्याओं के कारण पैदा होता है। सामाजिक स्मस्याओं का चित्रण

अनेक कवियों लेखकों ने किया है। प्रेमचन्दजी तो समाज के नग्न यथार्थ को पाठक के सामने ले आये। कवि भी इसमें पीछे नहीं रहे। महाप्राण निराला शोषकों के प्रति विद्रोह करते हुए 'कुकुरमुत्ता' कविता में लिखते है-

"अबे, सुन वे गुलाब
भूल मत, जो पाई खुश्बू रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट
तू हरामी खानदानी।"[४]

पारिवारिक समस्याएँ :

पारिवारिक समस्यों को समझने के पूर्व परिवार की विभावना को समझ लेना अपरिहार्य समझा जायेगा।

परिवार : परिभाषा एवं स्वरूप :

परिवार, समाज की संगठनात्मक दिशा की आधारशिला है। अत: परिवार से व्यक्ति की सामाजिक क्रियाएँ प्रारंभ होती है। परिवार ही उसके व्यवहारों का प्रारंभिक संचालनकर्ता है। व्यक्ति को अपने परिवार के आदर्शों तथा मूल्यों का पालन करना चाहिए। जहाँ पालन नहीं होता वहाँ परिवार टूट जाता है। परिवार का अंग्रेजी शब्द (Family) है। जिसका अर्थ 'सेवक' होता है। परिवार को दूसरे शब्दों यह कह सकतें है कि- वह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके सदस्य परस्पर स्नेह व सेवा भाव से रहे।

परिवार की प्रमुख परिभाषाएँ :

(१) "परिवार ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जिनके एक दूसरे के प्रति सम्बन्धों का आधार रक्त होता है।"[५]

(२) "परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त अथवा दत्तक

बंधनो से बंधा होता है। इसके द्वारा एकअकेले घर की रचना होती है ; इसके सदस्य पति-पत्नी ,माता -पिता , भाई-बहिन की सामाजिक भुमिका में एक दूसरे से अंतः क्रिया तथा अंत सम्प्रेषण करते हुए एक सामान्य संस्कृत्ति की रचना करते है।''[६]

परिवार के निम्नलिखित प्रकार माने गये है :-

१.संयुक्त परिवार

२.विभक्त परिवार

३.एकल परिवार

१. संयुक्त परिवार :

संयुक्त परिवार का अर्थ - सम्मिलित या इकट्ठा होता है , जिसमें माता-पिता , दादा-दादी ,चाचा-चाची , व उनकी उनकी संताने मिल-जुलकर रहती है। ग्रामीण व्यवस्था में संयुक्त परिवार के अनेक घर मिल सकते हैं। लेकिन आज संयुक्त परिवार टूट रहे है। आज़ादी के बाद संयुक्त परिवार अधिक टूटते जा रहे है। व्यक्ति आत्मनिर्भर होने के कारण यह टूटन अधिक दिखाई देती है। ऐसे संयुक्त परिवार में व्यक्ति का समुचित विकास नहीं हो पाता है। ग्राम्य-जीवन प्रायः कृषि पर निर्भर है और कृषि में संयुक्त-परिवार अधिक उपयोगी और कारगर सिद्ध होता है। व्यापार इत्यादी में भी संयुक्त -परिवार का विशेष महत्व है। परंतु अनेक कारणों से अब संयुक्त-परिवार बिखर रहे हैं।

२. विभक्त परिवार :

जिसमें केवल पति-पत्नी और बच्चें (जब तक बालिग और विवाहित नहीं होते) शामिल होते है , ऐसे परिवार को विभक्त परिवार कहते है। सरकार की जो परिवार विषयक व्याख्या है उसमें भी पति-पत्नी और बच्चों को रखा गया। आधुनिक शिक्षा , भौतिकवादी चिंतन , व्यक्तिवादी चिंतन यथा नगरीय जीवन के दबावों के कारण विभक्त परिवारों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

३.एकल परिवार :

एकल या एकक परिवार की विभावना अत्याधुनिक है। जहाँ लोग बिल्कुल अकेले रहते है , विवाह नहीं करते है , या विवाह के बाद तलाक लेकर अविवाहित जीवन बिताते है ,ऐसे परिवारों को एकल या एकक परिवार कहते है। पश्चिम में इसका चलन बढ़ रहा है। निर्मल वर्मा कृत 'वे दिन' की रायना एकक परिवार की सदस्या है। वस्तुतः इसे परिवार भी कहा जाय या नहीं , यह भी एक विचारणीय प्रश्न है।

पारिवारिक समस्याएँ :

स्वतंत्रता मिलने के बाद हमारे समाज में उपर्युक्त समस्या का चित्रण अधिक मिलता है। स्वतंत्रता के बाद उपजे हुए आर्थिक और सामाजिक विचारों के वैषम्यता का परिणाम - पारिवारिक विघटन है। संयुक्त परिवार हिन्दु समाज का प्रधान लक्षण है। आज आर्थिक विषमताओं के कारण जीवन मूल्यों में परिवर्तन आने से संयुक्त परिवार की नींव हिल गई है। संयुक्त परिवार के दोषों को बताते हुए बालकृष्ण भट्ट ने लिखा है :-''दिन-दिन परिवार बढ़ता जाता है , उनके भरण-पोषण और विवाह के खर्च का बोझ मनमाना लदता जाता है। होते-होते वह घराना या तो नष्टप्राय हो जाता है या रहा भी तो किसी गिनती में नहीं।''[७]

संयुक्त परिवार में रहने के कारण अनेक विडम्बनाएँ सहनी पड़ती हैं। आज शिक्षा , अर्थव्यवस्था एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार विघटित हो रहे है। मन्नूजी के कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन दो स्तरों पर रूपांतरित हुए है।

क. संयुक्त परिवार में विघटन

ख.दाम्पत्य विघटन

क. संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या :

पुरानी पीढ़ी की सत्ता को नयी पीढ़ी तोड़ उखाड फेंकना चाहती है। लड़किया भी अपने वैयक्तिक जीवन में माता-पिता का प्रतिबंध सहन करने को तैयार नहीं है। इस कारण एक छत के नीचे रहकर लोग घुटन मंहसूस करने लते है। मन्नू भंडारी की 'छत बनानेवाले' कहानी में पिता की तानाशाही के सामने नतमस्तक हो संत्रास के साथ बच्चे जीवन यापन करते है।

दाम्पत्य विघटन :

दाम्पत्य विघटन की समस्या का चित्रण मन्नूजी ने अनेक कहानियाँ व उपन्यास में किया है। दाम्पत्य विघटन के पीछे नारी पुरुष का अहं अधिक जवाबदार है। पुरुष की भाँति नारी भी अहं के प्रति अधिक जागरुक हो गई है। पहले वह अहं को मार डालती थी लेकिन आज वह ऐसा करने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए दाम्पत्य जीवन में तुरंत कड़वाहट आ जाती है। यहाँ तक की वह इस सम्बन्ध को एक झटके से तोड़ देती है। पारिवारिक विघटन की बात आती है तो हम पहले दादा-दादी, माता-पिता की परिकल्पना करते है। लेकिन आज परिस्थिति बदल गई है। आज नारी स्वतंत्र है। आज नारी पुरुष को पति के रूप में ही नहीं मित्र के रुप में भी पाना चाहती है। आज नारी न समझौता करना चाहती है और न अबला रहकर जीना चाहती है। आज नारी सबला है। वह हर जगह पर पुरुष के साथ टिके रहने की शक्ति रखती है। 'आपका बंटी' की शकुन इसलिए तो अजय से अलग हो जाती है। उसकी जगह पर पुरानी नारी यानीकि अशिक्षित या कम पढ़ी लिखी नारी होती तो तलाक न होता। लेकिन शकुन समझौता करना नहीं चाहती थी। दोंनो पति-पत्नी अगर समझौते करते तो - तलाक न होता। ''समझौते का प्रयत्न भी दोंनो में एक अंडरस्टेन्डींग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता वरन एक दूसरे को पराजित करके अपने अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से ।....भीतर ही भीतर चलनेवाली एक अजीब लड़ाई थी वह भी, जिसमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतिक्षा की थी कि कब

सामनेवाले की साँस उखड़ जाती है और वह घुटने टेक देता है , जिससे कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षमाशीलता के साथ उसके सारे गुनाह माफ करके उसे स्वीकार कर ले , उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निरे एक शून्य में बदल कर।'' ८

'बंद दराजो का साथ' की मंजरी और विपिन पति-पत्नी है । मंजरी प्राध्यापिका है। दोनों का जीवन सुखमय बीत रहा था। तीसरा महेमान आने ही वाला था। किन्तु मेज की तीसरी दराज में ताला देखकर मंजरी दुःखी हो उठती है। दोंनो पति-पत्नी के बीच पारस्परिक प्रेम और सद्भावना के स्थान पर संदेह और कुतर्क पैदा होने लगते है। विपिन की 'डायवर्स' लेने की साजिश खुल जाती है। अब दोनों अलग हो जाते है। बच्चे को विपिन बहुत प्यार करता है लेकिन मंजरी से अलग होने पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। मन्नूजी ने उसके दाम्पत्य जीवन के अकेलेपन तथा पीड़ा का यथार्थ चित्रण करते हुए लिखा है - ''तब मंजरी अपने ही घर में बहुत अकेली हो गई उठी थी और सबकुछ बड़ा वीराना लगने लगा था। हर काम बोझ लगने लगा था। खाली समय और भी बोझीला। वह घंटो किताब खोले बैठी रहती थी , पर पंक्तियाँ केवल आँखो के नीचे से गुजरती थी , मन उससे अछूता रहता था। कापिया देखने भेजती तो उसकी साथिने मजाक करती थीं कि वह इम्तहान की काँपिया देख रही है या प्रूफ। विपिन से सम्बन्ध क्या गड़बड़ाया था। उसकी समस्त इन्द्रियों के आपसी सम्बन्ध गड़बड़ा गए थे।'' ९

अकेलेपन की इस पीड़ा के बावजूद भी वह अकेली रहती है। और समय जाते-जाते दिलीप नामक व्यक्ति से दूसरी शादी करती है। वहाँ भी उसे वैसा प्यार नहीं मिल पाता जिसकी वह चाहत रखती है। हालांकि यहाँ पर जो दाम्पत्य विघटन बताया गया है उसका मूल शंका-कुशंका है। पति-पत्नी को जीवन में एक दूसरे के प्रति ईमानदारी का गुण होना अनिवार्य है।

'उँचाई' कहानी में भी दाम्पत्य विघटन की समस्या का चित्रण मिलता है। लेकिन परिस्थिति कुछ अलग प्रकार की है।

'उँचाई' की शिवानी एक आधुनिक नारी है । यह स्त्री लम्बे समय तक सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतित करती है । उसके पति शिशिर द्वारा दो बच्चे भी पैदा होते है। उसके बावजूद पुराने प्रेमी अतुल से आकस्मिक मिलते ही पुराना प्रेम जागृत हो उठता है । परिणामतः वह अपने पति शिशिर से धीरे-धीरे दूर होने लगती है । वह अतुल से शरीर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आतुर हो उठती है । इसलिए पति प्रेम में जीना मुश्किल हो जाता है । उसकी मनःस्थिति का चित्रण करते हुए मन्नूजी ने लिखा है -

"उनके बीच का प्यार और अपनत्व सो गया था , सो ही नहीं गया था , शायद मर गया था। एक ही पलंग पर दोनो के शरीर पास-पास लेटे थे , मगर मन के बीच एक अनंत दूरी आ गई थी। "[१०]

एक बार दाम्पत्य विघटन हो जाता है लेकिन कहानी के अंत में वह पति को अपना बना लेती है।

सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों में टूटन की समस्या :

आज हमारे सामाजिक सम्बन्धों एवं पारिवारिक रिश्तों पर अर्थतंत्र हावी है । मामा-मामी, बुआ, चाची, मौसी आदि सम्बन्धों की बात तो ठीक है , लेकिन माता-पिता, भाई-बहन , पिता-पुत्र, भाई-भाई आदि निकटवर्ती सम्बन्धों के मूल में भी अर्थ ही महत्वपूर्ण है । इसके फलस्वरुप संयुक्त परिवार टूट-टूट कर व्यक्ति परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं । और व्यक्ति समाज सापेक्ष न होकर केवल आत्मकेन्द्रित हो रहे है । आज वृद्ध माता-पिता बुढ़ापे में चिंताओं के बोझ से दबे हैं। पति-पत्नी एक दूसरे पर दोषारोपण करने में जुटे है और भाई-भाई संपत्ति के प्रश्न पर दुश्मन बन बैठे है।

सम्बन्धो के विघटन एवं टूटन का सही चित्रण उषा प्रियंवदाजी ने अपनी 'वापसी' कहानी में किया है । साथ-साथ 'राजेन्द्र यादव' की 'बिरादरी बाहर', भीष्म सहानी की 'खून का रिश्ता', 'यशपाल' की 'समय'आदि कहानियों में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है ।

मन्नू भंडारी ने भी इस समस्या का चित्रण अपनी कहानियो में एवं उपन्यास में किया है। कहानी के अंतर्गत 'एखाने आकाश नाई', 'शायद', 'सजा', 'यही सच है', 'अकेली' आदि में पारिवारिक सम्बन्धों में टूटने की समस्या का चित्रण हुआ है।

'एखाने आकाश नाई' और 'यही सच है' की सुष्मा और दीपा विवाह सूत्र में बँधने के लिए अपने सदस्यों से विद्रोह करती है। ये युवती संबंधो को खोखला एवं प्रपंच मात्र समझती है। इसलिए अपना मार्ग स्वयं तय करती है। 'सजा' कहानी में भी मन्नू भंडारीजी ने संबंधो के खोखलेपन का चित्रण किया है। जब आशा के पिता जी को नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब घर की स्थिति बिगड़ जाने के कारण आशा की माँ ने आशा एवं उसके छोटे भाई मुन्नू को उमेश चाचा के घर भेजते है, लेकिन वहाँ दोनों बच्चे नौकर सा जीवन व्यतीत करते हैं। आशा से तो पूरे घर का काम करवाया जाता है लेकिन छोटे मुन्नू को भी बख्शा नहीं जाता। एक जगह पर मुन्नू के बारे में आशा सोचती है -

" मुन्नू का रंग काफी साँवला पड़ गया था। चेहरा सूखकर मुरझा गया था और आँखे बड़ी सहमी-सहमी सी लग रही थी। लगा, बहुत डरकर-दबकर रहता है शायद यहाँ। घर में तो कितना ऊधम करता था। इंतना सा बच्चा, कैसे उसने अपने को बदला होगा, दबाया होगा? देखा, उसका काम था साल भर के बिट्टू को खिलाना। सारे दिन वह उसे गोदी में टाँगे-टाँगे फिरता। कब तो वह पढ़ता होगा, कब वह होमवर्क करता होगा।" [११]

उमेश की पत्नी नन्ही सी आशा पर नौकरो सा काम तो करवाती है। साथ -साथ उसके पिताजी के बारे में कटु शब्दों का प्रयोग करती हुई बार-बार कहती है-"ऑफिस से बीस हजार गायब करके गाड़ दिए और हमारा खूनचूस रहे हैं। ये हमारे से बड़े है। लानत है ऐसे बडप्पन पर।"[१२]

कुछ दिनो के बाद तो उमेश चाचा खुद कहने लगे -"अब भाई साहब को लिख दो कि पचास रुपये नहीं भेज सकेंगे। इस मँहगाई के जमाने में दो पालना ही बहुत भारी पड़ रहा है, फिर हमारे भी तो बच्चे हैं। कौन यहाँ खान

गड़ी है ।''[१३]

'शायद' कहानी का राखाल दाम्पत्य सम्बन्धों में ठंड़क महसूसता है । वह अपने घर में स्वयं को पराया या अजनबी पाता है । उसे अपनी गैरहाजिरी में बच्चों के बिगड़ने की दुश्चिंता बहुत कचोटती है । राखाल की आर्थिक स्थिति सुधरी होती तो राखाल के जीवन में अकेलापन, सूनापन,परायापन,जैसे विकृत तत्व न आ पाते । निम्नलिखित उदाहरण में राखाल की मानसिक स्थिति देखिए- ''अनायास ही रंजू की बात याद आई कि जहाजवाला को तो शादी करनी ही नहीं चाहिए । यहाँ रात-दिन मशीनों से सिर फोडो, पैसा मिले तो घरवालों की हाजरी में । भैया, हम अच्छे है , जिस घाट उतरे , तफरी कर ली ....न किसी का देना, न लेना ।''[१४]

'चश्में' कहानी में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है । इस कहानी का नायक अपनी पूर्व प्रेमिका शैल को केवल इसलिए छोड़ देता है कि वह एक मृत्युकारक बीमारी से पीड़ित है । लेखिका ने दोंनो के प्रेम संबंधो का चित्रण करते हुए एक जगह पर लिखा है कि जब शैल का प्रेमी बीमार था तो बिना हिचकिचाये शैल अपने प्रेमी निर्मल की सेवा करती है , हालाँकी यह रोग रोगी के संपर्क में आने से दुसरे को भी लग सकता था। फिर भी उसकी परवाह किये बिना वह निर्मल की सेवा करती है । इस बात का चित्रण निम्नलिखित अवतरण में है -

''मैं तो यही बैठूंगी मैं तुम्हारी जगह होऊँ और तुम मुझसे ऐसा परहेज करो तो तुमसे बात भी ना करूं । और वह बड़े प्यार से बालों में अँगुलियाँ डालकर सहलाने लगी । निर्मल के बदन की जलन मानों किसी ने ठंड़ी चीज का लेप कर दिया । एक घंटा बीताकर वह गई तो आधी बीमारी अपने साथ लेती गई । ''[१५]

लेकिन जब शैल को टी.वी. नामक रोग होता है तो वह उससे दूर भागता है । यहाँ लेखिका यह स्पष्ट करती है कि भाई-भाई में ही नहीं माता-बेटी के सम्बन्धो में ही नहीं बल्कि दो प्रेमियों में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है ।

समाज व्यवस्था में पुरुष प्रधानता की समस्या :

हिन्दुस्तान की समाजव्यवस्था सदियों से पुरुष प्रधान रही है ,क्योंकि पहले से ही पुरुष बाहर की दुनिया में काम करता है । इसी परंपरा की वजह से पुरुष स्त्री उपर अधिकार जमाता है । अब नारी शिक्षा प्राप्त करके पति से कंधो से कंधा मिलाना चाहती है । लेकिन कहीं-न-कहीं पुरुष प्रधान व्यवस्था अवरोधक है ।

मन्नूजी ने अपने कथा साहित्य में उपर्युक्त समस्या का चित्रण किया है । मन्नूजी ने अपने 'इसा के घर इन्सान', 'दीवार, बच्चेऔर बरसात', 'कील और कसक', 'स्त्री सुबोधिनी', 'संख्या के पार' में किया है ।

आज भी नारी पुरुष प्रधान समाज में छटपटाती है , वह बाहर निकलना चाहती है । पुरुष स्त्री को इन सभी समस्याओं से मुक्त कब करेगा ? वह पुरुष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए छटपटाती है । आज भी अखबारों में अधिक खबरें स्त्री शोषण की मिलती है । 'बंद दराजो के साथ' कहानी की मंजरी का उदाहरण देखने लायक है । मंजरी स्वनिर्भर नारी थी लेकिन पुरुष प्रधान समाज उसे कितनी हद तक द्रबाता है उसका सुंदर कलात्मक ढंग से चित्रण मन्नूजी ने इस कहानी में किया है । मंजरी विपिन से अलग होकर दिलीप से शादी करती है । उसके विपिन के द्रारा आसित नामक पुत्र भी प्राप्त हुआ था। मंजरी नौकरी करने के कारण आसित की पढ़ाई के लिए कोई प्रोब्लेम नहीं था। लेकिन जब दिलीप ने उसकी नौकरी छुड़वा दी तब वह पुरुषप्रधान समाज की समस्या का भोग बनती है । क्योंकि कुछ ही दिनों में दिलीप ने आसित की फिस देने से मना कर दिया । अब उसे पति की बाते माननी पड़ती है । यहाँ तक कि आसित को होस्टेल में भेज देना पड़ता है ।बैचारी मंजरी घुटन महसूस करती है । अब वह नौकरी छोड़के बहुत पछताती है , लेकिन क्या कर सकती है । वह एक को पहले छोड चुकी थी ।अब दुसरे पुरुष की पाबन्धियाँ । उसकी मानसिक स्थिति का चित्रण करते हुए मन्नूजी ने लिखा है- ''बाहर से कुछ नहीं बदला था-न

बात-चीत मैं , न व्यवहार में । पर अनजाने और अनचाहे ही भीतर से जैसे मन बँट गये थे,जिंदगी बँट गई थी ।... आगे उसे सारी जिंदगी इन टुकडों की अभिशप्त छाया में काटनी होगी कि वह अब कभी भी अपनी सम्पूर्ण जिन्दगी नहीं जी पाएगी ।''[१६]

पुरुष आधुनिक विचार-धारा वाली नारी को भी कैसे ब्लेकमेइल करके अपने विचारों से दबा देता है उसका सुंदर उदाहरण 'हार' कहानी है । हार कहानी की दीपा पुरुषप्रधान समाज में रहकर भी सक्रिय राजनीति में भाग लेती है । दोंनो पति-पत्नी चुनाव में खड़े रहते है ।उसका पति शेखर विरोध पक्ष में था । अब निश्चित हो गया था कि दीपा चुनाव जीत ही जायेगी । तब शेखर नारी सहज भावनाओं की हत्या करके अपनी पत्नी को अपनी बनाके उसका वॉट ले लेता है । पुरुष किस प्रकार स्त्री की भावनाओं से खिलवाड़ करता है उसका सुंदर उदाहरण निम्नांकित है । शेखर ने प्लान के अनुसार अपने मित्र शर्मा को कहता है -''इसी का तो गम है , मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही है । सोचता हूँ , मैं हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूँगा । पुरुष हूँ, और सहने का आदि । पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा । तुम देखते हो, पगली हो गई है इस के पीछे । वह हार का धक्का बर्दास्त नहीं कर सकेगी और सच पूछों तो इसलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ ।''[१७]

शेखर की ऐसी बनावटी बातों में दीपा आ जाती है कि वह खुद , सुबह में उठकर उसके पति को वोट दे देती है । आज भी भारत के असंख्य गाँव पुरुष प्रधान की समस्या से ओतप्रोत है । आज के युग में तो पुरुषप्रधान की समस्या और विकृत हो गयी है । बड़े-बड़े सरकारी दफतरों स्त्री किसी कुर्सी पर आसीन दिखती है तो अनेक लोग उस पर बोंसिंग करते दिखते है । जब तक स्त्री-पुरुष के बीच अहं की टकराहटें होती है तो स्त्री हंमेशा पराजित हो जाती है । मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि स्त्री अभी भी उतनी दुःखी है । लेकिन पुरुष-प्रधान समाज का शिकंजा इतना कठोर और मजबूत है कि स्वतंत्रता , व स्वनिर्भरता की तमन्ना के साथ जीने-मरने की उत्कट लालसा रखनेवाली स्त्री अंततोगत्वा हारकर पुरुष

प्रधान समाज का ही शरण लेती है । मनु ने 'मनुस्मृति' में जो नारी के बारे में कहा था वह आज सरासर झूठ साबित होता है -

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।''[१८]

'आपका बंटी' की शकुन अजय के 'अंह' से त्रस्त होकर उससे विवाह-विच्छेद तो कर लेती है , परंतु फिर अजय को नीचा दिखाने के लिए डॉ.जोशी से विवाह-सूत्र में बँधती है , तब वह मानो विवाह-सूत्र में ही नहीं बँधती, बल्कि पुरुष-सत्ता-सूत्र में भी बँध जाती है क्योंकि दूसरी बार की वैवाहिक असफलता से बचने के लिए वह डॉ.जोशी से कदम-कदम पर समझौता कर सकती है ।

पुराने एवं आधुनिक संस्कारों के बीच पिसती नारी :

स्त्री आज पुरुषों के साथ कदम से कदम मिला रही है । वह नियंत्रणो के घेरों में से धीरे-धीरे मुक्त होने लगी । आधुनिक शिक्षा , दिक्षा प्राप्त करने के कारण वह अपने व्यक्ति-स्वातंत्र्य का विकास कर रही है , किन्तु स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज में स्त्री को सबसे पहले उन परंपरागत मूल्यों के साथ झगडना पड़ता है । पूर्ण मुक्ति के लिए वह अवश्य प्रयत्न करती है , परंतु पुराने संस्कार के कारण उसे पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती ।

मन्नूजी ने इस समस्या का चित्रण 'एक कमजोर लडकी की कहानी' में मन्नूजी ने ऐसे ही संस्कारों के बीच फँसी नारी का चित्रण किया है । पिता, माता, परिवार , मामा-मामी, और अंत में पति के संस्कारों से आक्रांत वह लड़की अपनी मानसिक कमजोरी के कारण अपने प्रेमी के साथ भाग जाने में कामयाब नहीं होती । लड़की का नाम रूपा था । उसके प्रेमी का नाम ललित था । सच पूछो तो इस कहानी की रूपा बड़ी ही कमजोर लड़की थी । जब वह तीन साल की बच्ची थी , तब जिद्दी और हठीली थी । लेकिन माँ के मर जाने के बाद वह नई माँ के नियंत्रण में आ गई ।उसके पिता सोच-विचार कर उसको मामा के घर भेज देते हैं । रुपा की इच्छा मामा-मामी के घर न जाने की थी । लेकिन पिताजी के निम्नलिखित कथन से वह मान जाती है ।

"रूपा बेटी ! अरे वह बड़ी समझदार लड़की है , मेरा कहना वह कभी टाल सकती है भला।"[१९]

ऐसी मीठी बातों से , विरोध करनेवाली रूपा पिता की मीठी बातों से मामा के घर चली जाती है। मामा के घर अपने घर की अपेक्षा उसे अधिक प्रेम मिला। वहाँ एक तीसरा लड़का भी था , जिसका नाम ललित था। मामा-मामी को पुत्र न होने के कारण ललित को गोद लिया था। रूपा के पढ़ने का जिम्मा ललित पर सौंपा गया था। तीन वर्ष ललित के साथ रहने से दोनो में प्रेम हो गया। जब ललित विदेश जानेवाला था तो वह रूपा को यह कहकर जाता है-

"...लौटूँगा तो मुझे इसी हालत में लौटा देगी। ऐसा न हो कि मैं लौटू और देखूँ कि तूने रूपा को किसी और के घर का शृंगार बना दिया हो। तू बड़ी कमजोर है रूपा, इसी से मन डरता है। बोल रूपा मेरी धरोहर को रख सकोगी ना ? "[२०]

ललित के विदेश चले जाने के बाद पिताजी तथा मामा-मामी के आग्रह पर चुपचाप किसी आधेड़ वय के वकील से ब्याह कर लेती है। जब ललित विदेश से लौटा तो वह सीधा रूपा के घर चला जाता है। दोनों के मन में तूफान सा मचल उठता है। ललित कुछ दिनों के लिए महेमान के रूप में रूपा के घर रूक जाता है, उस दौरान वह देखता है रूपा सुखी नहीं है, उसका मन मसोस उठता है, वह रूपा को उबार लेना चाहता है। वह कहता है कि मेरे साथ भाग चल। पुराने संस्कारों के कारण ललित की बात का विरोध करती है, पर आखिर में उसकी बात स्वीकार कर लेती है। चलो भाग चलते है।जब तक वो रूपा के घर रहा रूपा को काफी दृढ़ बनाया था। विदेश की स्त्रियाँ की स्वतंत्रा की बातें तलाक, प्रेम विवाह आदि की बातें बताकर उसे समझा दिया था कि वह जो भी कर रही है गलत नहीं कर रही। रूपा ललित के साथ भाग जाने तथा उसके साथ जीवन बिताने की मधुर कल्पना कर रही थी। भागने से पहले दो जोड़ी कपड़े और कुछ रूपये ले लिए। रात को एक बजे दोनों भागने वाले थे। रात के नौं बजे उसके पति वकील साहब घर लौटे और देर से आने का कारण बताते हुए कहा -

'' आज एक बड़ा पुराना मित्र मिल गया था। उसी से बातें करने में देरी हो गई। बड़ी मुसीबत में था बेचारा। उसकी स्त्री अपने किसी आशिक के साथ भाग गई।'' [२१]

रूपा का चहेरा फीका पड़ जात है। वकील साहब रूपा की मन:स्थिति समझे बिना अपनी अपनी धुन में आगे बात करते हुए कहतें है -

'' मुझसे सलाह लेना चाहते थे कि क्या किया जाय ! मैंने तो साफ कह दिया, कानूनी कारवाई करो। पर उनका कहना था कि पढ़ी-लिखी लड़की है, कानून के जोर से उसे अपना नहीं बनाया जा सकता। पर मैंने तो साफ कह दिया, पढ़ी-लिखी है तो सिर पर बिठाओ। पढ़ी-लिखी ! अरे ! पढ़ी-लिखी तो तुम भी हो, भागने की बात तो दूर रही; दो साल हो गये, मुझे कभी याद नहीं पड़ता कि तुमने आँख उठाकर भी किसी पुरूष से बात भी की हो।'' [२२]

रूपा की आँख में से आँसू टपकने लगे और दूसरी और सूटकेश में से कपड़े निकलने लगी। पुराने संस्कारों में जीने वाली रूपा ललित के साथ भाग जाने के संकल्प पर कैसे अटल रह सकती है? उस बेचारी ने पुन: उसी घुँटन एवं त्रासद स्थिति में जीना शुरू कर दिया। इसी प्रकार वह पुराने संस्कार एवं आधुनिक संस्कारो के बीच पीसती रहती है।

खंडित दाम्पत्य जीवन की समस्या :

मन्नूभंडारी ने खंडित दाम्पत्य जीवन की समस्या को 'आपका बंटी' उपन्यास एवं अन्य कुछ कहानियों में भी चित्रित किया है। उक्त समस्या का चित्रण 'आपका बंटी' उपन्यास में अधिक मिलता है। स्त्री शिक्षा पश्चिम की गलत बातों का अन्धा अनुकरण, वैयक्तिकचेतना, स्त्री-पुरूष के अहं की टकराहट आदि के कारण आज-कल स्त्री-पुरूष के दाम्पत्य जीवन खंडित हो रहे हैं।

पहले के जमानें में स्त्रियाँ कम पढ़ी हुई होती थी, लेकिन पुरूष प्रधानता के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में कोई समस्याएँ पैदा नहीं होती थीं। लेकिन

सातवें दशक तक आते-आते स्त्री अधिक शिक्षा प्राप्त कर रही है। वह पुरूष की तरह हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारण स्त्री के अंदर भी अहं पैदा होने लगा है। इसलिए जो स्त्री पहले सुन लेती थी, आज पढ़ी हुई स्त्री दाम्पत्य जीवन में समझौता करना नहीं चाहती। इसी कारण खंडित दाम्पत्य जीवन की समस्या बढ़ती जा रही है।

'आपका बंटी' उपन्यास के 'शंकुन' और 'अजय' दोनों के अहं की टकराहट के कारण विवाह विच्छेद हो जाता है। अगर उसकी जगह पर कोई अन्य स्त्री होती तो समझौता कर लेती। लेकिन शकुन उच्चशिक्षा प्राप्त व एक कॉलेज की प्रिन्सिपल भी थी, इसलिए समझौता करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता? फलतः दोनों के बीच वैवाहिक जीवन में एक-दूसरें को नीचा दिखाने कि चेष्टा करते गए और दोनों के मध्य की खाई दिन-प्रतिदिन चौड़ी होती गई। इस बात का चित्रण करते हुए मन्नूजी ने लिखा है -

"शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का अहसास दोनों के मन में बहुत साफ होकर उभर आया था। जिस पर हर दिन और हर घटना ने केवल शान ही चढ़ाई थी। समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंड़रस्टैंडिंग पैदा करने के लिए नहीं होता था, वरन एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकाक्षां से तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दुःखी और बेचैन तथा छटपटाते हुए देखने की आकाक्षां में रोते।"[२३]

आगे भी मन्नूजी ने शकुन एवं अजय के भीतर चलनेवाली लड़ाई एवं संघर्ष का सुंदर चित्रण करते हुए लिखा है-

"भीतर ही भीतर चलनेवाली एक अजीब ही लड़ाई थी वह भी जिसमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतिक्षा की थी कब सामनेवाले की साँस उखड़ जाती है और वह घुँटने टेक देता है, जिससें कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षयशीलता के साथ उसके गुनाह माफ करके उसे स्वीकार ले, उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को एक निरे शून्य में बदलकर। और इस स्थिति को लाने के लिए सभी प्रकार के

दाँव-पेच खेले गये थे, कभी कोमलता के, कभी कठोरता के। कभी सब कुछ लुटा देने वाली उदारता के, तो कभी सब कुछ समेट लेनेवाली कृपणता के। प्रेम के नाटक भी हुए थे और तन-मन को डुबो देनेवाले विभोर क्षणों के अभिनय भी ? पता नहीं कभी भावुकता, आवेश या उत्तेजना भी रही है पर शायद दोनों के ही दयालु मनो ने उन्हें कभी उस रूप में ग्रहण ही नहीं किया। दोनों ही एक-दूसरे की हर बात, हर व्यवहार और हर अदा को नया दाँव समझने को मजबूर थे और मजबूरी ने दोनों के बीच की दूरी को इतना बढ़ाया कि बंटी भी उस खाई को पाटने के लिए सेतु नहीं बन सका।''[२४]

कुछ समय पश्चात् अजय अपना ट्रान्सफर करा लेता है और शकुन से अलग कलकत्ता में रहने लगता है। कलकत्ता में वही मीरा नामक किसी युवती के संपर्क में आता है। अभी तक शकुन और अजय के बीच तलाक नहीं हुआ था, लेकिन दोनों की दशा तलाकशुदा पति-पत्नियों जैसी थी। अजय वकील चाचा के द्वारा शकुन के पास यह सन्देश भिजवाता है कि शकुन तलाक को अंतिम रूप दे दें। फिर भी लगभग दोनों सात-आठ वर्ष अलग रहें। शकुन को आशा थी कि शायद अजय उससे समझौता कर लेगा क्योंकि वह बंटी को प्यार करता है, जो उसके पास रहता है। लेकिन वह यह समाचार सुनकर दु:खी हो जाती है कि अजय और मीरा सुखपूर्वक ही नहीं रह रहे बल्कि मीरा को बच्चा भी होने वाला है। शकुन के मन में एक क्षण के लिए यह विचार आता है कि अजय को तलाक फिलहाल न दूँ तो मीरा का बच्चा अवैद्य बच्चा होगा। किन्तु बाद में फैंसला बदल देती है। इस प्रकार मन्नूजी ने खंडित दाम्पत्य जीवन की समस्या को उजागर किया है।

खंडित दाम्पत्य में निरीह बच्चों की समस्या :

पति-पत्नी के अपने-अपने 'अहं' की टकराहट में सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति उन बच्चों की होती हैं जो उनकी लड़ाई में बेमौत मारे जाते हैं। 'आपका बंटी' का बंटी जब शकुन के पास होता है तब भी पिता के प्यार के लिए तड़पता

रहता है। दूसरे बच्चों के माता-पिता साथ रहते हैं तब उसे अपने में कोई कमी नज़र आती है और स्वंय को वह बहुत ही असुरक्षित महसूस करता है। शकुन अजय को दिखा देने के चक्कर में जब डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है तब तो बंटी की स्थिति और भी खराब हो जाती है। वह निरंतर स्वयं को उपेक्षित-सा महसूस करने लगता है। शकुन और डॉ.जोशी को एक रात नग्न-अवस्था में देख लेने के बाद तो उसका मानसिक संतुलन ही बिगड़ जाता है और एक समय का तेज-तरोर बुद्धिमान लड़का धीरे-धीरे 'डल' होता जाता है, इतना ही नहीं अब वह एक 'Problematic child' होता जा रहा है। योरोप-अमेरिका में हिप्पी और बिटल्स की जो समस्या थी उसके मूल में यही खंडित दाम्पत्य-जीवन ही था। देवानंद की एक फिल्म का 'थीम' ही इस विषय पर आधारित है। मेरे निर्देशक डॉ. पारूकांत देसाई ने 'आपका बंटी' की जो समालोचना की है उसमें उपन्यास का उपशीर्षक बाँधते हुए लिखा है- '' आपका बंटी- कल के बिटल की आज की कथा!''

दहेज की समस्या :

दहेज प्रथा राष्ट्र के भाल पर कलंक का टीका है। दहेज की समस्या हिन्दू समाज के लिए अभिशाप है। दहेज की समस्या के कारण कई औरतों को जिन्दा जलाया जाता है। साथ-साथ शिशु हत्या, अनमेल विवाह आदि समस्याएँ उसी के द्वारा पैदा होती हैं। महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में दहेज-प्रथा तथा वरमूल्य प्रथा का चित्रण कहीं-न-कहीं किया है। दहेज के कारण माता-पिता का आर्थिक बिखराव, दहेज न लाने पर दुल्हन पर अमानुषित अत्याचार, पिता द्वारा दहेज इकट्ठा न कर पाने के कारण कन्या द्वारा आत्महत्या, कम शैक्षिक योग्यता वाले पति से विवाह आदि का चित्रण महिला लेखिकाओं के द्वारा अधिक किया गया है।

प्रतिभा सक्सेना ने 'शर्त' नामक उपन्यास में उक्त समस्या का चित्रण किया है। दहेज के कारण आज के समाज में विवाह नहीं किन्तु सौदा होता है। मन्नू

भंडारी ने 'स्वामी' उपन्यास में इस तथ्य को कलात्मक ढंग से उभारा है। 'स्वामी' उपन्यास की टुकी नामक लड़की जो थोड़ी मोटी है। इसी कारण लड़के वाले दहेज की माँग करते है। वे कहते है कि लड़के को लड़की पसंद नहीं आई, लेकिन पचीस हजार दहेज में दोगे तो हम लड़के को समझा सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि लड़केवाले दहेज चाहते है। या तो शादी को टालना चाहते हैं। घनश्याम की माँ मनचाहा दहेज देकर विवाह करने की सलाह देती है, लेकिन घनश्याम का यह जवाब है -

'' टुकी उन्हें पसंद होती तो मैं जैसे भी होता, जहाँ से होता रूपये का प्रबंध करता। दुकानें बेचता, अपने को बेचता, पर रूपये का प्रबंध करता। पर वे कहते है कि लड़की हमें बिलकुल पसंद नहीं है, मोटी है। सोचो माँ कोई तरीका है, यह बोलने का फिर ऊपर से कहते है, पच्चास हजार रूपया दे दो तो हम लड़के को राजी करने की कोशिश कर सकते हैं। छी...छी...छी.. ऐसी सौदेबाजी... इतना घटियापन।''[२६]

मन्नू भंडारी के इस उपन्यास को पढ़ने पर हमें उपन्यास सम्राट प्रेमचंदजी का 'निर्मला' उपन्यास याद आता है। उस उपन्यास में प्रेमचंद जी ने उक्त समस्या को केन्द्र में रखकर सुंदर कथायोजना का गठन किया है। उसमें निर्मला की शादी अच्छे घराने में तय हुई थी, लेकिन शादी के कुछ समय पहले उसके पिता का देहांत हो जाने की वजह से मंगनी टूट जाती है। जब शादी तय हुई थी, तब लड़के के पिता और लड़का दोनों मनोमन यह समझ रहे थे कि अच्छा घर है, इसलिए दहेज तो मिलनेवाला है, लेकिन निर्मला के पिता की मौत ने उनकी दहेज रूपी भूख तृप्त नहीं होने दिया, इसलिए निर्मला की शादी अधेड़ वय की व्यक्ति के साथ होती है। निर्मला की माता कोसती थी कि अगर मेरे पति जिन्दा होते तो मेरी लड़की की शादी धूमधाम से होती। जिस तरह 'निर्मला' उपन्यास में पिता के न होने के कारण उनकी लड़की की जिदंगी अंधकारमय हो जाती है, उसी प्रकार 'स्वामी' उपन्यास में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि अगर पिता होते है तो किसी न किसी तरह लड़की को अच्छी जगह ब्याहने का प्रयास करते। यहाँ भी

निर्मला की माँ की तरह टूकी की माँ कहती है -

"मांगे है पच्चीस हजार तो देना ही पडेंगे। जैसे भी हो, करो इंतजाम। रूपयों के पीछे, क्या मेरी लड़की अनब्याही ही रह जायेगी ? हे भगवान ! आज टूकी के बाबा होते तो क्या यों घर आये लोगों को लौटा देते।"[२७]

घनश्याम अपने माँ को दहेज न देने के लिए समझाने का प्रयास करता है, लेकिन माँ दहेज देने के पक्ष में है। क्योंकि माँ को मालूम हो चुका है कि दहेज रूपी जहर पूरे देश में फैल चुका है। अगर दहेज नहीं देगें तो लड़की का ब्याह अच्छे घराने में हो ही नहीं सकता। इसीलिए तो वह घनश्याम को दहेजरूपी राक्षस का पक्ष लेती कहती है कि-

"कोई सौदेबाजी नहीं, सब लेते है। लड़के के ब्याह में कौन रूपया नहीं लेता ? तुम खाली हाथ बहू ले आये तो सारी दुनिया तो नहीं लायेगी। दो पच्चीस हजार और करो संबंध।"[२८]

'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में भी मन्नू जी ने इस समस्या का संकेत किया है। हालांकि इसमें विवाह के बाद भी कई लोग पत्नी को टार्चर करके मैके से कुछ न कुछ रूपये मंगवाने की कोशिश करते हैं ,उसका चित्रण मन्नू जी ने 'एक इंच मुस्कान' में किया है। इस उपन्यास की शकुन संगीत टीचर है। वह एक जगह पर कहती है -

"मौनी दा... अच्छा, आप गहने बेचने की ही बात लीजिए- मेरा हसबैंड मुझे एक तो खाना नहीं देता था। कमरे में बंद करके टार्चर करता था कि मैं घर से रूपया क्यों नहीं मांगती।"[२९]

मन्नू जी ने 'कमरे, कमरा और कमरे' में तो दहेज प्रथा समस्या का हल भी प्रस्तुत किया है। इस कहानी की नीलिमा एक शिक्षित युवती है और उसकी नौकरी लग गयी है किन्तु उसकी संशय में रहती है कि लड़की नौकरी न करे तो उन्हें-

"उधर अम्मा को सलाह दी जा रही थी कि जब तक रिश्ता पक्का हो, नौकरी जरूर करवा दो, आजकल तो लड़कियाँ भी धडल्ले से कमाने लगी हैं। भगवान ऐसा न करे पर यदि दो साल रिश्ता न हुआ तो अपने दहेज का खर्च भी

खुद ही निकाल लेगी।''[३०]

कारण, दहेज न देने से नारी को पति व ससुराल से तिरस्कार सहना पड़ता है।

इस प्रकार मन्नूजी ने दहेज प्रथा समस्या को उभारा है। अगर इस समस्या को कुछ दूर करना है तो घनश्याम जैसे युवक-युवतियों में दहेज रूपी रूपी राक्षस को करने की मन: स्थिति तैयार करने पर ही दहेज के अभिशाप से मुक्ति मिल सकती है। कई बार लोगों द्वारा दहेज पर लेख लिखना, समाज सुधारक के लिए सभायें करना, मंच पर भाषणबाजी करते हैं। इससे कोई परिवर्तन आनेवाला नहीं है। आज अधिकांश समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ दोमुखी बातें करते हैं, उनकी कथनी और करनी में काफी अंतर है। ऐसे समाजसुधारक दूसरों के घर जाकर समाज में दहेजप्रथा को निकालने की बात करते हैं, लेकिन उनकी पुत्री के विवाह में भी दहेज प्रथा , लेने-देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस अभिशाप की ज्वाला से उनके अंत:करण को प्रकाशित करना होगा। दहेज प्रथा रूपी कीचड़ को दूर कर आत्मज्ञानरूपी कमल को खिलाना होगा। इस दहेजरूपी दानव को काबू में नहीं किया गया तो कितनी ही भोली-भाली लड़कियों को वह निगल जायेगा। इसे दूर करने के लिए सख्त कानून व्यवस्था बनानी होगी। साथ-साथ उसका अमल भी करना होगा। तभी यह दहेजरूपी अभिशाप मिट सकता है।

अनमेल विवाह :

अनमेल विवाह वैवाहिक समस्या है। विवाह स्त्री और पुरूष के जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय है। एकसूत्र में बँधने से पहले मश्वरे, सोच, विचार, जाँच-पड़ताल आदि की आवश्यकता है। अन्यथा विवाह, जीवन के लिए बोझ बन जाता है। जीवन को नर्क-सा बना देता है। इसलिए हमारा समाज इस कार्य के सम्पादन के लिए सतर्क होता है। बहुआयामी दृष्टि से विचार करता है, ताकि बाद में पछताना न पड़े। अनमेल विवाह का चित्रण प्रेमचंदजी ने अपने 'गबन' एवं 'निर्मला' , 'गोदान' आदि उपन्यासों में किया है।

हमारे देश में विवाह की वही परंपरागत प्रथा है। माता-पिता द्वारा जोड़े तय किए जाते हैं। अत: अनमेल विवाह एक समस्या के रूप में उभर रही है। समाज में अनमेल विवाह में कहीं अवस्था का अंतर होता है, तो कहीं विचारों का। अवस्था अंतर अधिक होने जहाँ जीवन सुखी हो सकता है वहीं वैचारिक मतभेद होने के कारण कई बार पति-पत्नी का जीवन सदा ही दु:खदायक एवं कष्टदायक होता है।

प्रेमचंदजी ने अपने सामाजिक उपन्यास 'निर्मला' में इस समस्या को प्रमुख रूप से उठाया है। जो कि सोलह-सत्रह साल की लड़की थी। जिसकी शादी एक अधेड़ वय के चालीस वर्ष के पुरूष के साथ होती है। जिसके तीन बड़े-बड़े लड़के भी थे। उन दोनों के अनमेल विवाह के कारण जीवन तो नर्क समान हो जाता है। साथ-साथ उन बच्चों का जीवन भी नर्क समान हो जाता है। 'ममता कालिया' ने 'बेघर' उपन्यास में वैचारिक मतभेद का चित्रण किया है। दीप्ती खंडेलवाल ने 'प्रतिध्वनी' उपन्यास में भी अनमेल विवाह का चित्रण किया है। आपका बंटी उपन्यास अजय और शकुन का विवाह हुआ है। किन्तु वे अपने वैवाहिक जीवन में सुखी नहीं रह पायें। दोनों ने एक दूसरे को समझा ही नहीं। शकुन अपनी गलती को समझ नहीं पाती। शायद उसके पीछे शकुन की अहंवादिता थी। शकुन अपने वैवाहिक जीवन में दृष्टिपात करते हुए यह निष्कर्ष पर पहुँचती है -

"दोनों कभी एक दूसरे को प्यार किया ही नहीं।...शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का अहसास दोनों के मन में बहुत साफ होकर उभर आया था, जिस पर हर दिन और हर घटना ने केवल सान ही चढ़ाई थी।"[३१]

शकुन एक जगह पर सोचती भी है कि वह जो भी करती है उल्टा क्यों हो जाता है ? जैसे-

"सब लोग केवल उससे चाहते ही हैं और वह उनकी चाहनाओं को पूरी करती रहे, यही एक मात्र रास्ता है उसके लिए। बस कुछ न चाहे। जहाँ चाहती है, वहीं गलत क्यों हो जाती है ? ऐसा अनुचित असम्भव भी तो उसने

कुछ नहीं चाहा। एक सहज सीधी जिदंगी जिसमें रहकर वह कम से कम यह तो महसूस तो कर सके कि वह जिन्दा है, केवल सूरज डूब-उठाकर ही उसे रात होने और बीतने का अहसास न कराये। इसके अतिरिक्त भी कुछ हो।''[३२]

जब अजय द्वारा मीरा से विवाह करने से पूर्व शकुन ने विवाह नहीं किया था। इसके लिए वह बहुत दु:खी है, वह सोचती है कि अजय ने पहले विवाह किया और मुझे जो दु:ख हुआ, उसकी जगह पर मैंने अपनी शादी पहले कर ली होती तो पीड़ा का दंश पहले अजय को पहुँचता। शकुन का यह सोचना। इस उदाहरण से अजय और शकुन के वैचारिक मतभेद का ख्याल आता है। शकुन सोचती है -

'' नहीं, अजय से कुछ न पा सकने का दंश यह नहीं है, बल्कि दंश शायद इस बात का है कि किसी और ने वह सब कुछ क्यों पाया, जो उसका प्राप्य था। या इस बात का था कि वह सब कुछ तोड़-तोड़कर निकलती और अजय उसके लिए दु:खी होता, छटपटाता साथ नहीं रह रहें हैं, ऐसी स्थिति तब भी वैसी ही रहती, पर फिर भी कितना कुछ बदल गया होता। यदि अजय के साथ मीरा न होती, बल्कि उसके साथ कोई अपना होता....सच पूछा जाये तो अजय के साथ न रह पाने का यह दंश नहीं है, यह वरन अजय का हरा न पाने की चुभन हो यह, जो उसे उठते-बैठते सालते रहती है।''[३३]

'एक इंच मुस्कान' में रंजना व अमर के स्वभाव में काफी अंतर है। रंजना का यह विचार है -

''रविवार के दिन तो हम लोग साथ रहे, उसमें भी ये आजमनेवाले आ जाएंगे तो... वह शिकायत करती है कि शादी के बाद इतने शीघ्र हम एक-दूसरे यों ही अपरिचित अनजाने रह जायेंगे-इसकी कल्पना भी नहीं की थी।''[३४]

उसके बावजूद रंजना माँ बनना चाहती थी किन्तु अमर उसका गर्भपात करवा देता है। उस समय रंजना अपने वैवाहिक जीवन पर कटु आलोचना करती है-

''मुझे लग रहा था, हम दो ऐसे किनारे हैं, जिन्हें अब कोई सेतु नहीं

बाँध सकेगा, हम कभी एक नहीं हो सकेंगे।''[३५]

मन्नू जी ने अपनी कहानियों में भी उक्त समस्या पर संकेत करती हैं। 'अकेली' और 'बाहो का घेरा' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। 'अकेली' की सोमा बुआ एक सहृदयी, परोपकारी महिला है किन्तु उसका पति कुछ विपरीत है। इसलिए तो -

''उन्होंने कभी पति की प्रतीक्षा नहीं की, उनकी राहों में आँखें नहीं बिछायी।... क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छन्दधारा को कुंठित कर देता।''[३६]

जब पति-पत्नी अपने दाम्पत्य जीवन में यौनतृप्ति कर नहीं पाते तो वह भी अनमेल विवाह की समस्या का एक अंश है। 'बाहो का घेरा' की कम्मो जड़-पति से यौन तृप्ति नहीं कर पाने से वह अतृप्त रह जाती है। वह सोचती है -

''यों होने को सभी कुछ हुआ, पर कम्मों ने महसूस किया कि मित्तल बहुत जड़ है - बिल्कुल यांत्रिक। उमंग, उत्साह, प्यार की गर्मी, पागल बना देने वाली आतुरता, कुछ भी तो नहीं था। उसका मन विरक्ति से भर गया। दो दिन में वह पुरानी भी पड़ गई। चढ़ने से पहले ही नशा उतर गया। हर दिन आता और मित्तल की यही जड़ता उसे अधिक खिन्न बनाकर चली जाती। वह चुपचाप रो लेती - पर बेचो - खरीदो। हानि-लाभ के बीच जब किसी को उन आँसुओं को देखने की फुर्सत ही नहीं थी तो उन्हें कोई पोंछता तो कैसे!''[३७]

तलाक की समस्या :

विवाह विच्छेद या तलाक की समस्या आज कल तत्कालीन युग में अधिक दिखाई देती है। उस पर कई लेखक-लेखिकाओं ने प्रकाश डाला है। तलाक के पीछे नारी या पुरूष का अहंभाव प्रमुख रहा है। जो वर्तमान समाज के लिए दु:खद बात है।

मन्नूभंडारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में विवाह और तलाक की समस्या

HANSA MEHTA LIBRARY

को उजागर किया है। शकुन और अजय के वैवाहिक संबंधो के तनाव के मूल में दोनों की ही अहंवादिता का हाथ था। इस उपन्यास की लेखिका स्वंय कॉलेज की लेक्चरर रही है। अत: उन्होंने इस तथ्य को अधिक नहीं उभारा है। शकुन की प्रकृति में अहंवादिता का समावेश उसकी आत्मनिर्भरता एवं कॉलेज की लेक्चरर होने का परिणाम था। यही शकुन बाद में प्रिन्सिपल भी बनती है। इस उपन्यास में तलाक की समस्या का जहाँ तक संबंध है, लेखिका ने कोई विशेष कारण निर्देश नहीं किया है। हाँ ! वैवाहिक जीवन के आरंभिक दिनों से शकुन और अजय दोनों को यह मालूम पड़ा था कि उन दोनों का चुनाव गलत था। यह गलत चुनाव निभ जाता। यदि उन दोनों में से कम अहंवादी होता, किन्तु ही घोर अहंवादी होने तथा एक दूसरे को नीचा दिखाने की चेष्टा करते रहने के कारण उन दोनों के मध्य की खाई निरंतर चौड़ी होती गई। इस खाई को दूर करने में बंटी भी असफल रहता है। मन्नूजी इसके बारे में लिखती है

''उसने कई बार अपने और अजय के सम्बन्धों के रेशे-रेशे उधेड़े है-सारी स्थिति में बहुत लिप्त होकर भी और सारी स्थिति से बहुत तटस्थ होकर भी। पर निष्कर्ष हमेशा एक ही निकलता है कि दोनों ने एक-दूसरे का प्यार कभी किया ही नहीं।... शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का एहसास दोनों के मन में बहुत साफ होकर उभर आया था, जिस पर दिन और हर घटना ने केवल शान ही चढ़ाई थी। समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैडिंग पैदा करने के लिए नहीं होता था, वरन एक एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकाक्षां से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दु:खी और बेचैन तथा छटपटाते हुए देखने की आकाक्षां में रोते।''[३८]

मन्नूभंडारी ने इस उपन्यास में इस तथ्य को भी उभारा है कि पति-पत्नी के बीच होनेवाले तलाक के कारण पुरूष की अपेक्षा स्त्री को अधिक मानसिक क्लेश सहन करना पड़ता है। जैसे- '' उसने एक उड़ती सी नज़र ममी पर डाली। ममी की आँखे वैसे ही चाचा पर टिकी हुई है। आँखो में से वैसे ही सवाल झूल रहे

है । पर चाचा है कि चुप । बोलते क्यों नहीं ? बात करनी है, तो करे बात । वहाँ खिड़की में क्या देखे जा रहे है ? बात वहाँ तो लिखि हुई नहीं है ।... कैसी मरी-मरी हुई आवाज निकल रही है आज उनकी । टक-टकी लगाए ममी की आँखे जैसे पथरा गई है । बस मूर्ति की तरह वे बैठी हुई है मानों साँस भी नहीं ले रही है ।''[३९]

इस तलाक को रोकने के लिए वकीलचाचा माध्यम बनते है लेकिन वह सफल नहीं हो पाते । वकील चाचा ने तो प्रारंभ में ही समझाया था -

'' दो जने साथ रहते है तो ऐडजस्ट तो करना ही पड़ता है शकुन, अपने को कुछ तो मारना ही पड़ता है ।''[४०]

लेखिका ने तलाक और पुन:विवाह को मानवजीवन में स्थायित्व का आदान-प्रदान नहीं किया किन्तु यह तो स्थिति और भी कष्टदायक होती है । जैसे -

'' साथ-साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी ।.....

.... एक अध्याय था जिसे समाप्त होना था । और वह हो गया । दस वर्ष का यह विवाहित जीवन-एक अंधेरी सुरंग में चले जाने की अनुभूति से भिन्न था । आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है । पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिये जाने की विवश कचोटभर है । पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश, न वह खुलापन । न मुक्ति का अहसास लगता है । जैसे इस सुरंग उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है-फिर एक और यात्रा-वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन ।''[४१]

नैतिक मूल्यों का पतन :

सामाजिक समस्याओं में भी एक बड़ी समस्या है नैतिक मूल्यों का पतन । नारी का सौदा आज इतना सस्ता हो गया है कि जिसे देखकर आश्चर्य और घृणा

होती है। इस पतन का चित्रण कई लेखक और लेखिकाओं ने अपने उपन्यास और कहानियों में विस्तार से किया हैं। 'नवजागरण' के साथी देश में नैतिकता एवं मूल्यों पर संकट आ पड़ा है। पूराने मूल्य तेजी से टूटने लगे और नैतिक आदर्श अब व्यक्ति के आचारण के नियामक नहीं रह पाये। मन्नूभंडारी आज के वैज्ञानिक युग में प्राचिन नैतिक मूल्यों की रूढी को स्वीकारते जाने की प्रवृत्ति का विरोध करती है। वह मानती है-

"ईश्वर और धर्म के रूढिबद्ध रूप का पालन करके तो हम तिलक लगाकर जिंदगी भर माला ही जपते रह जायेंगे। जीवन के बेहत्तर मूल्यों के लिए अपनी सार्थकता के लिए, विवेक, मानवीय संवेदन और सह-अनुभूति की आवश्यकता होती है, ईश्वर की नहीं।"[४२]

नये नैतिक मूल्य बोधने पारंम्परिक स्थापित मूल्यों को तोड़ा है। यौन पवित्रता, लज्जा, शील के प्रति आज व्यक्ति का दृष्टिकोण एकदम बदल गया है ! यौन स्वतंत्रता केवल पुरूष वर्ग की मिल्कत नहीं रही। इस क्षेत्र में नये व्यक्तिगत प्रतिमान सामने आए। जिन्हें सामाजिक मान्यता की कोई जरूरत नहीं ! जहाँ तक सामाजिक, नैतिक मूल्यों की बात करते हैं तो हम कह सकते हैं कि दया, अहिंसा, परोपकार, आदर, प्राणी मात्र के प्रति सेवा भाव, सच्चाई आदि सामाजिक मूल्य है। समाज वैयक्तिक चेतना से जूड़ा हुआ है। वैयक्तिक चेतना में परिवर्तन, सामाजिक,परिवेश को प्रभावित करता है और परिवर्तित सामाजिक परिवेश, सामाजिक धारणाओं, मान्यताओं एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। जिससे सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन आता है।

आज आधुनिक शिक्षा, जीवन-स्थितियों, तकनीकी विकास और औद्योगिकरण और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने प्राचीन मान्यताओं के बेमानी करार दे दिया है। बहुसंख्यकवर्ग प्रेम, नैतिकता, विवाह ईश्वर सम्बन्धी धारणाओं के संदर्भ में प्राचीन मूल्यों को छोड़ नहीं सकता। आज नारी स्वातंत्र्य की आकांक्षा स्वावलंबी दृष्टिकोण, पुरूषों के लिए सुरक्षित क्षेत्रों में पदार्पण और समता की उद्घोषणाओं से नारी पुरूष संबंधो में अप्रत्याशित परिवर्तन उभारा है। चिरकाल से पुरूष के

हथकंड़ो की शिकार और अपने अधिकारों से वंचित नारी आज पूर्णत: जागरूक है। मन्नूभंडारी की 'दिवार, बच्चे और बरसात' में बरसात के तेज बहाव से दिवार का ढह जाना वास्तव में परंपरागत रूढियों से नारी का मुक्त होना है। 'यही सच है' कहानी में नायिका दीपा देह शुचिता और शारीरिक पवित्रता जैसे प्रश्नों को नकारकर भी न अपराध बोध से दु:खी है, और न पाप बोध से। संत्रस्त वह उसी क्षण को सच मानती है। जिसे उन्हें तन्मय ही माना है।

'ऊँचाई' नामक कहानी इस विषय में अत्यन्त क्रान्तिकारी कहानी कही जा सकती है। जहाँ मन्नूभंडारीजी ने नवीनतम मूल्यों को प्रस्तावित करते हुए नारी के पति और प्रेमी दोनों के साथ ही जीवन निर्वाह करने की स्थिति को चित्रित किया है।

शिवानी और शिशिर दोनों पति-पत्नी हैं। अतुल शिवानी का भूतपूर्व प्रेमी है। एक दिन शिशिर को पता चल जाता है कि शिवानी के अतुल नामक व्यक्ति से भी प्रेम सम्बन्ध है। शिशिर को आश्चर्य हुआ कि छोटी से छोटी बात कह देने को आतुर रहने वाली शिवानी इतनी बड़ी बात छुपा गई और वह जान भी न पाया। इस कारण शिशिर घर छोड़कर चला गया। लेकिन शिवानी उसे प्रेम और विश्वास से मना लेती है। वह शिशिर से यह कहती है-

'' ऐसी बात तुम्हारे मन में क्यों आती है ? अतुल अपनी सीमा जानता है। जो उसका नहीं, उसे पाने की लालसा भी कभी नहीं करता। अपने को कष्ट देना वह जानता है दूसरे के लिए कष्ट का कारण बनना उसका स्वभाव नहीं है। और मेरे दायित्व की बात उठाकर व्यर्थ ही क्यों अपने को नीचे गिरा रहे हो ? मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है, उसे कोई नहीं ले सकता, लेना तो दूर, उस तक कोई पहुँच भी नहीं सकता। किसी से कितनी ही निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ। पर, मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है। वहाँ कोई नहीं आ सकता ; किसी से उसकी तुलना करने में भी तुम्हारा अपमान होता है।''[४३]

इस प्रकार अपने पति को शिवानी मना लेती है और फिर से दोनों एक हो

जाते है। यह एक क्रांतिकारी दस्तावेज देती हुई कहानी मानी जाती है। क्योंकि उसमें नारी पति एवं प्रेमी दोनों के साथ जीवन निर्वाह करने में कामयाब होती है। यह एक नवीनत्तम मूल्य है।

'एखाने आकाश नाई' कहानी में सुषमा के माता-पिता अपनी पुत्री के विवाह का इसलिए विरोध करते हैं क्योंकि उनकी कमाऊँ बेटी की गृहस्थी बसाने पर उनकी जिम्मेदारी कौन उठाएगा? सुषमा पारिवारिक सदस्यों की उपेक्षा कर मित्रों-दोस्तो की सहायता से अपना घर बसा लेती है। आज जरूरत है आपसी समझौते की, एक-दूसरे को जानने की। इसलिए सुषमा महिम के विवाह पर आपत्ति जनक प्रश्नों का कोई महत्व नहीं रह जाता।

'नकली हीरे' कहानी में भी मन्नूजी ने सम-सामयिक जीवन मूल्यों पर करारी चौट की है। आधुनिक सभ्यता यह मानती है कि अर्थ-व्यवस्था अच्छी हो; घर में सुख-सुविधाएँ अधिक हो। पत्नी गहनों से लदी हुई हो। यहीं लोग जीवन में सुखी है। जबकि प्राचीन मूल्यों के अनुसार खाना-पीना, रहन-सहन के लिए पर्याप्त आय हो, और पति-पत्नी के बीच अटूट सम्बन्ध हो तो भी वे सुख का अनुभव कर सकते हैं।

'नकली हीरे' कहानी में मिसेज सरन आधुनिक सभ्यता का प्रतीक है। जब की उसकी बहन इन्दु पुरानी सभ्यता का प्रतीक या प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री हैं। मिसेज सरन वैभवशाली ठाठ-बाट के प्रदर्शन को ही सब कुछ समझती है। उसमें जीवन का सार देखती है। अंत में वह मिसेज सरन को इन्दु की भावात्मक समृद्धि पर इर्षा हो उठती है। अंत में इन्दु और इनके पति के बीच के प्रेम सम्बन्धों को समझने पर अपनी भौतिक समृद्धि नकली लगने लगती है। इस प्रकार लेखिका ने सम-सामयिक जीवन मूल्यों का परिचय देते हुए नवीन-मूल्यों और पुराने मूल्यों के बीच का अंतर स्पष्ट किया है।

'तीसरा आदमी' कहानी में मन्नूजी ने पुराने मूल्य और नये मूल्यों की जबरदस्त टकराहट का चित्रण किया है। नये जीवन का मूल्य स्त्री परपुरूष की बातचीत को अनुमति देनेवाला है। परंतु पुराने मूल्यों में भी पराये पुरूष से

बातचीत नहीं कर सकती। इस कहानी में सतीश और शकुन के द्वारा इस बात का वर्णन किया है। सतीश और शकुन पति-पत्नी है। एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते है। लेकिन उस कहानी में आलोक नामक और भी एक पुरूष पात्र है जो लेखक है। आलोक की रचनाएँ शकुन को बहुत ही अच्छी लगती है। इस लिए कभी-कभी आलोक को वह घर भी बुलाती है। इस से सतीश के मन में शकुन के प्रति एक संदेह की भावना उत्पन्न होती है। इससे सतीश एक बेहद आत्मसंधर्ष में फँस जाता है। वह परंपरागत नैतिकता के कारण अजीब सा महसूस करता है। वह खूद बेहद परेशानी अनुभव करने लगता है। पति-पत्नी के बीच में किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश भले ही वह कितनी भी पवित्रता को बनाये रखतें हुए हो, फिर भी पति के मन में शंका उत्पन्न हो ही जाती है। यह भी पुरूषमति की स्वभाविक कमजोरी है। यहाँ आलोक और शकुन को एकांत में बातचीत करने के कारण पुराने मूल्यों के अंदर विश्वास रखनेवाला सतीश, अपनी पत्नी शकुन को शंका की दृष्टि से देखता है। हालांकि आलोक और शकुन के बीच ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं था।

'नई नौकरी' कहानी में मन्नूजी ने उक्त समस्या का चित्रण किया है। पुराने मूल्यों के अनुसार हर स्त्री को विवाह के बाद अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व पति के व्यक्तित्व में समर्पित कर देना है। स्त्री को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा का अधिकार नहीं दिया गया है। परंतु आधुनिक जीवन-मुल्यों के अनुसार नारी को भी अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता बनाये रखने के लिए अधिकार मिला है। लेकिन नारी जब तक अर्थ-उपार्जन नहीं करती तब तक कुछ संभव नहीं है। आर्थिक दृष्टि से पराधीन नारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं ले सकती। यहीं आलोच्य कहानी 'नई नौकरी' में प्रतिबिम्बित हुआ है।

इस कहानी की रमा पढ़-लिखकर लेक्चरर बनती है, किन्तु जब उसकी शादी कुन्दन से होती है तो कुन्दन के कहने से वह नौकरी छोड़ देती है। जिससे उसका कार्यक्षेत्र घर की चार दिवारों में सिमट जाता है। जब अर्थ की दृष्टि से वह पराधीन होती है तो उसकी स्वतंत्रता सिमट ने लगती है और पुरानी परंपरा के अनुसार वह पति के लिए सबकुछ समर्पण कर देती है। साथ-साथ पुरूष प्रधानता

की भोग-बनती है।

प्रेम त्रिकोण की समस्या :

आज कल आधुनिक समाज ने विकराल रूप धारण कर लिया है। पति-पत्नी और वो वाली बात आज कई जगह पर मिलती है। मन्नू भंडारी जी ने प्रेम त्रिकोण समस्या का चित्रण अपने उपन्यास एवं कहानियों में किया है। 'एक इंच मुस्कान' में भी प्रेम त्रिकोण समस्या का चित्रण मिलता है। अमर कथाकार है। उसकी प्रेमिका रंजना से कुछ समय के पश्चात शादी कर लेता है। रंजना कॉलेज में पढ़ाती है। धीरे-धीरे अमर, अमला नामक युवती के संपर्क में आता है। वह घर के दायित्व से अलग हटता जाता है। रंजना अमर की इस वृत्ति को पहचान लेती है, लेकिन वह कुछ नहीं कर पाती। अमर जब अपने मित्र को घर लाता है तो रंजना दूसरे कमरे में जाकर बैठ जाती है लेकिन किसी भी प्रकार की आवभगत नहीं करती। दूसरी ओर अमला धनाढ्य पिता की पुत्री है। वह पति परित्यक्तता है। धीरे-धीरे अमर भी अमला को अपने लेखन की प्रेरणा मानने लगा।

एक दिन रंजना डायरी के माध्यम से अमर और अमला के बारे में जान लेती है। उसे बड़ा मानसिक आघात लगता है। वह अमर को छोड़कर मीरा के पास चली जाती है। वहाँ जाकर अमर को पत्र लिखती है-

"कैसे हुआ यह विवाह, आरंभ के दिनों में ही ऐसी उदासीनता। कोई उमंग नहीं, कोई उत्साह नहीं। अधिक से अधिक समय साथ बीते ऐसी कोई इच्छा नहीं। इससे तो पहले ही अच्छा था ..... वह आगे लिखती हैं - निकटतम से निकटतम क्षणों में भी मैंने तुम्हारें शरीर का दबाव ही महसूस किया है, उस गर्मी का कभी एहसास ही नहीं हुआ। जो प्यार से उत्पन्न होती है। और जिससे मन की जड़ता गल जाती है, और अलगाव की सीमाएँ टूट जाती है।" [४४]

आगे भी वह अमर के बारे में मंदा भाभी को लिखती है-

" प्यार की मैं भीख मागूँ, इतना मुझसे नहीं गिरा जाता। उनके मन में मेरे प्रति जो प्यार था, यदि वह मर गया तो जिंदगीभर अपने प्यार की लाश पर आँसू भले ही बहा लूँ, उनके आगे अब हाथ नहीं पसारूँगीं।"[४५]

नारीजन्य इर्ष्या के कारण अमला को स्वीकार नहीं कर सकती। वह चाहती है कि अमला के हाथों अमर की बरबादी हो। अमर ने उसे दु:खी किया है इसलिए उसको भी दु:ख मिले। उपन्यास के अंत में रंजना अन्य संबंधियों के आग्रह पर पुन: अमर के पास चली जाती है।

अस्पृश्यता की समस्या :

सदियों से यह समस्या हिन्दुस्तान में चली आ रही हैं। हमारे भारतवासियों ने अछूतों द्वारा नारा लगाने के बाद भी हिन्दू समाज समय-समय पर अपनी विकृत मानसिकता का परिचय देता रहता है। अस्पृश्यता समाज के मानस पटल में से निकाल ने के बजाय बढ़ती जा रही है। भारत में शिक्षा फैलने के बाद भी यह समस्या अभी भी विद्यमान है। खास करके गाँवो में इस समस्या की जड़े मजबूत है। 'महाभोज' की इस ग्रामीण प्रथा पर लेखिका मन्नू भंडारी ने लिखा है -

" दुहाई गरीबों की सब देते हैं, पर उनके हित की बात कोई नहीं सोचता। जनता को बाँटकर रखों.... कभी जात की दीवारें खींचकर, तो कभी वर्ग की दीवारें खींचकर ! जनता बँटा-बिखरापन ही तो स्वार्थी राजनेताओं की शक्ति का स्त्रोत है। कुछ गलत कह रहा हूँ मैं ?"[४६]

आगे भी मन्नू भंडारीजी सुकुल बाबू के विचारों से स्पष्ट कर दिया कि अभी भी यह समस्या समाज में विद्यमान है। जैसे-

"एकदम बँधे-बँधाएँ। एक नहीं फूटने का उनमें से। अब बचे हुए सारें वोट अपने पक्ष में करने पडेंगे-तब बात बनेगी। पर इन नीची जातवालों का कुछ भरोंसा नहीं। घेर-घारकर लाने पर भी कुछ तो वोट देने आएँगें ही नहीं और जो

आएँगें उनका कब रूख बदल जाए और वे फूट लें, कुछ ठीक नहीं ससुरों का। अब सारे हरिजन और बिसू की जातवाले एकजूट होकर सुकूल बाबू के साथ नहीं आए तो बहुत महँगा पड़ जाएगा यह भाषण।''[४७]

'स्वामी' उपन्यास में भी छुआछूत की समस्या की ओर संकेत किया है। छुआछूत की समस्या सिर्फ निम्न जाति तक सीमित नहीं है। 'स्वामी' उपन्यास की मिनी की सास छुआछूत में भी विश्वास करती है। घर के लोगों द्वारा छूने से उनकी सास का चूल्हा अपवित्र हो जाता है। एक बार मिनी ने अपने पति के लिए उस चूल्हे का प्रयोग करती है तो उसकी सास ऊँची आवाज में चिल्लाती है तब घनश्याम यह कहता है-

''एक लोटा गंगाजल डालकर चूल्हा पवित्र कर लो तो... खाली एक लोटा गंगाजल से छूत थोड़े ही मिटेगी।''[४८]

तब टुकी से न रहा गया, वह भी व्यंग्य करने से नहीं चूकती-

''ग्यारह बाल्टी पानी डालना होगा, फिर गोमूत्र से लीपना होगा।''[४९]

यहाँ एक ही परिवार के घर में व्याप्त छुआछूत की समस्या को उजागर किया है।

नारी विषयक विविध सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का चित्रण :

मन्नू भंडारी जी ने अपने कथा साहित्य में नारी की अधिक समस्याओं को उजागिर किया है। नारी की समष्टिगत चेतना और उनके जीवन के विविध पक्षो का चित्रण भारतेन्दु एवं परवर्ती साहित्यकारों में भी देखने को मिलता है। उनके बाद प्रेमचन्दजी ने सभ्यता के आवरणों को चीरती हुई ग्रामीण नारी के निःछल, सहज एवं संत्रस्त रूप को पाठक समक्ष रखा। सामाजिक दृष्टि से प्रताड़िता, अपमानिता नारी को प्रेमचन्दने उसके अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

प्रसाद के नारी पात्र कुछ अतित गौरव और प्राचीन आदर्शों का प्रतीक

है । उनके नारी पात्र स्वभावत: त्याग एवं बलिदान प्रिय होते है, और वे अपने भीतर सदा प्रेम, करूणा, वेदना की मौन कराह लिए होते है । प्रेमचन्द युग के कहानीकारों ने इतिहास के माध्यम से अतित को चित्रित करते हुए नारी के महिमामय रूप के चित्र खींचे और भगवतीचरण वर्माजी ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का प्रतिनिधित्व करनेवाली नारियों के उदाहरण पाठकों के समक्ष रखें ।

स्वातन्त्रोंत्तर परिवेश में सन्दर्भ और सम्बन्ध परिवर्तित हो गए । नारी के नैतिकता से सम्बन्ध अवधारणाओं को तिलांजलि देकर काम को देहधर्म क्रिया, नैसर्गिक प्रक्रिया स्वीकार कर आधुनिकबोध से सम्पन्न वैचारिकता का समर्थन किया । समाज की थोथी अर्गलाएँ, आरोपित मान्यताएँ हिल उठीं और नारी ने आत्मनिर्भर होकर अपनी जागरूकता का प्रमाण दिया । जिसमें ऊषा प्रियंवदा, मोहन राकेश, भीष्म सहानी, निर्मल वर्मा, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम आदि लेखक, लेखिकाएँ प्रमुख हैं ।

मन्नूजी ने नारी विषयक अनेक समस्याओं का चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया हैं । यहाँ हम नारी से सम्बन्धित कुछ विशेष समस्याओं का चिंतन करेंगें ।

पुरूषों द्वारा प्रताड़ित नारियों की समस्या :

मन्नूभंडारी ने अपने कथा-साहित्य में कुछ ऐसी नारियों का उल्लेख भी किया है जो पुरुषों की धोखाबाजी , दुष्टता का शिकार हुई है । 'अभिनेता' कहानी की रंजना , 'आतेजाते यायावर'की मिताली नामक स्त्री पात्र पुरुषों के मायावी आचरण से बुरी तरह प्रताड़ित हुई हैं । रंजना दिलीप से आकर्षित होती हैं, उसके साथ विवाह करके जीना चाहती है लेकिन जब दिलीप की दराज से मिले प्रेमपत्रों से उसके दूसरे व्यक्तित्व का पर्दाफाश हो जाता है । इसे देखकर वह बहुत दु:खी हो जाती है । रंजना के लिए यह दूसरा धक्का था । उसे रह रहकर दिलीप की प्यार भरीं बातें याद आ रहीं थी , और वह किसी प्रकार अपनी आँखों

पर विश्वास नहीं कर पा रही थी , पर वे पत्र थे कि कोंच-कोंचकर उसे भयंकर वास्तविकता का परिचय दे रहे थे । रंजना का माथा तक चकरा गया था । और टूटा दिल लिए वह डगमगाते कदमों से लौट आई । इस प्रकार दिलीप अनेक स्त्रियों से धोखा-धड़ी करने में माहिर है ।

'आतेजाते यायावर' का नरेन भी नारी सौंदर्य का रसलिप्सु है । वह अपनी बातों की जाल में युवतियों को फँसाने के लिए अलग-अलग प्रकार के हथकंडे का प्रयोग करता है । नरेन ने मिताली से जो इच्छा रखी थी वह पूर्ण हो जाती है उसके पश्चात् उसे कहता है -''आज तुम्हें अंधेरे कुए से निकलकर खुली -फैली दुनिया में ले आया हूँ । अब जानोगी कि जीना क्या होता है । ''[५०]

इस प्रकार मिताली से प्रेम सम्बन्ध जोड़कर उसका सबकुछ लूटकर न जाने कहा गायब हो जाता है । और जब वापस आता है फिर से मिताली से कहा - ''खींचकर लाना मेरा काम था , अब इस खुली दुनिया में चलना और अपना रस्ता तलाश करना तुम्हारा काम है ।''[५१]

'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में विवाहिती पुरुष द्वारा छली गयी स्त्री का वर्णन किया गया है । इस कहानी की नायिका २७ साल की है जो आयकर विभाग में काम करती है और महिला होस्टेल में रहती है । वह अपने बाँस शिंदे से काफी प्रभावित रहती थी । क्योंकि वह खूबसूरत व्यक्ति एवं कवि था । आठ साल तक दोनो का प्रेम चला लेकिन उसे बाद में पता चलता है कि शिंदे शादीसुधा ही नहीं एक बच्चे का बाप भी है । उस स्त्री का प्रेम पाने के लिए वह बार-बार यही कहता रहता है कि पत्नी हंमेशा त्रासदायक होती है । शादी एक ट्रेजेडी है । वह तलाक लेने की बात भी करता रहता है । लेकिन वास्तव में वह पत्नि को तलाक देना नहीं चाहता था । शिंदे का एक दिन तबादला हो जाता है लेकिन पत्रों एवं छोटे-छोटे उपहारों द्वारा वह उस स्त्री का दिल जीतने की कोशिश करता रहता है । फिर से स्त्री उसकी बातों में आ जाती है । एक दिन जब उसने शिंदे का घर तथा पत्नी , बच्चे को देखा तो मालूम हुआ कि शिंदे उसे बेवकूफ बना रहा था । वह सत्य स्थिति जानकर अपने आप को संभाल लेती है । इस कहानी के द्वारा लेखिका

नवयुवतियों को जागरुक करना चाहती है कि शादीसुधा पुरुष कैसे भोली बालिकाओं को अपनी वासना शिकार करते है। साथ-साथ पत्नी के सम्बन्ध भी बनाये रखते हैं।

'नशा' कहानी की आनन्दी का विवाह शंकर से हुआ था। उसका पति शराबी होने के कारण घर की जिम्मेदारी उस पर थी। आनन्दी को दो बच्चे मर गये थे, सिर्फ किशनू बच गया था। वह शराबी शंकर की मार खाकर आँसू बहाती रहती है। इस प्रकार शंकर द्वारा आनन्दी को प्रताड़ित किया जाता है।

मातृत्व का सुख न मिलने से पीड़ित नारी की समस्या :

यह समस्या कितने अरसों से हिन्दुस्तान में चल रही है। हरेक स्त्री माता बनना चाहती है। मन्नूजी ने कुछ कहानियों में माता न बनने की बात उठाई है लेकिन वही पात्र अंत में मां बनने के लिए लालायित है। मातृत्व प्राप्ति जिसको नहीं मिलती उस स्त्री का तो लोग सुबह में मुँह तक नहीं देखना चाहते। यह स्थिति आज भी गाँवो में देखने मिलती है। मन्नूभंडारी आधुनिक लेखिका के बावजूद नारी के मातृरूप को अत्यन्त श्रध्धा रूप में देखा है। उनकी नारी चाहे कितनी भी शिक्षित हो, चाहे सामाजिक ढाँचे में क्रान्ति का आह्वान करती हो, लेकिन नारी के मातृत्व को पूर्णतया स्वीकारती है। 'जीती बाजी की हार' कहानी में इसका सुंदर चित्रण हुआ है। मुरला एक उच्च ओहदा पर है। जो विवाह को बन्धन मात्र समझती है। लम्बे अरसे बाद आशा से मिलती है। उसकी छोटी बेटी को माँग लेती है और अपनी जीती हुई बाजी को हार में बदलकर मातृरूप के महत्व का समर्थन कर देती है। उस कहानी का निम्नलिखित कथन इस बात की पूर्ति करता है। ''नारी सबकुछ होकर भी नारी है और नारी को एक साथी चाहिए; एक सहारा चाहिए परिवार चाहिए और चाहिए बच्चे। उच्च से उच्च शिक्षा भी उसकी इस भावना को नहीं कुचल सकती।''[५२]

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की दर्शना अन्तिम क्षणों में नैना से भेंट करके उसके मातृत्व को परितृप्ति मिलती है। 'अकेली' कहानी की सोमा बुआ

बिना बुलाये लोगों की सुध लेती रहती है। सब के शादी ब्याह, मँगनी के समय मदद करती हैं इस सेवा के पीछे मातृत्व की अतृप्ति ही है।

सामाजिक अन्याय एवं अमानवीय शोषण का भोग बनती नारी :

मन्नूजीने अपने कथासाहित्य में नारी पात्र सामाजिक अन्याय एवं अमानवीय शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं। आधुनिक बोध की दृष्टि से उन्हें धर्म के पूज्य अनैतिक मूल्य स्वीकार्य नहीं है। वे धार्मिकता के आड़ में होनेवाले अमानवीय शोषण के समक्ष बुलन्द आवाज उठाती है। उनकी नारी बुद्धिमान एवं जागरूक है। 'ईसा के घर ईन्सान' कहानी युवा अध्यापिकाओं पादरियों दिग्भ्रमित करनेवाले सिद्धान्तों का विरोध करती है। सिस्टर एंजिला फादर मानसिक परिस्कार के प्रयोग को चुनौती देती हु साफ-साफ शब्दों में कह देती है -

"मुझे कोई नहीं रोक सकता,जहाँ मेरा मन होगा मैं जाऊँगी। मैंने तुम्हारे फादर....अब वे कभी ऐसी बात नहीं करेंगे।"[५३]

एंजिला की विजय अनैतिकता , अंधविश्वास एवं ब्राह्यआडम्बर पर आधुनिक नारी की विजय है। नारी जैसे-जैसे आत्मनिर्भर होती गयी उसमें आत्मविश्वास, विवेक, स्वाभिमान, बौद्धिक चेतना का विकास हुआ। अब वह न तो पति की कठपुतली है और न गृहिणी के दायित्व का निर्वाह करनेवाली कामचलाऊ मशीन। आज वह पायलोट, प्रधानमंत्री, शिक्षण संस्थान की संचालिका, प्रिन्सीपल, मोर्डन सभा सोसायटी में भाग ले सकती है। समाज को सही मार्गदर्शन भी दे सकती है। आज वह पति के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाई तो तुरंत इससे अलग हो जाती है। नारी स्वतंत्र है। 'हार'कहानी की नायिका अपने आदर्शों की पूर्ति के लिए राजनीतिक जीवन में पति की प्रतिद्वन्द्विता कर सकती है। 'तीन निगाहो की तस्वीर'की दर्शना पति के द्वारा प्रताड़ित की जाने पर अकेली रहती है। और अपने टेलेन्ट के अनुसार एक स्कूल में संगीत की शिक्षिका बनकर जीवन-यापन करती है। आज की नारी पति से अलगाव महसूस होने पर विवाह

सम्बन्ध विच्छेद करने या पुर्नविवाह करने में भी स्वतंत्र है। 'आपका बंटी' उपन्यास एवं 'बन्द दराजों के साथ' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। 'आपका बंटी' की शकुन और उसके पति अजय दोनों का दाम्पत्य जीवन ज्यादा ठीक नहीं रह पाया। दोनों को एक पुत्र प्राप्त हुआ था, वह भी दोनों को एक न कर सका। अगर शकुन आत्मनिर्भर व मोर्डन पढी हुई नौकरी पेशा नारी न होती तो दोंनो के बीच तलाक न होता। यानि की शकुन की तरह तुरंत निर्णय न लेती।

पति द्वारा पत्नी को धोखाधड़ी की समस्या :

आगे हम पुरूष द्वारा नारी को प्रताडित की जानेवाले समस्या के अंतर्गत चर्चा की। लेकिन पति-पत्नी के सम्बन्धों में भी पति के द्वारा धोखा-घड़ी की जाती है। 'तीन निगाहों की तस्वीर' कहानी की दर्शना यथा-संभव पति की सेवा करती है। कम आमदनी में भी वह घर चला रही थी। पर उसका पति उसके चरित्र पर कीचड़ उछाल के उसे पीटता है। दर्शना का हरिश के प्रति आकर्षण जरूर है लेकिन वह दुश्चरित्रा स्त्री नहीं है।

'नयी नौकरी' कहानी में रमा की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है। रमा प्राध्यापिका थी। कुंदन और रमा हमेशा साथ रहते है। कुंदन की नौकरी लग जाने के बाद सारी पर्सनालिटी बदल जाती है। उसको कंपनी द्वारा फ्लैट भी मिलता है। फ्लैट सजाने की जिम्मेदारी रमा पर है। इसी वजह से वह अपने पढ़ाने का काम ठीक तरह से नहीं कर पाती। धीरे-धीरे वह काम में उलझ जाती है। कुंदन रमा की नौकरी छुड़वा देता है। जिसमें रमा का अस्तित्व खतम हो जाता है। रमा प्राध्यापिका की नौकरी छोड़कर घर की नयी नौकरी में लग जाती है। किन्तु उसके बाद रमा के प्रति कुंदन का व्यवहार बदल जाता है। वह उसके साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करता और एक तरह से रमा की स्थिति घर की नौकरानी-सी हो जाती है। इस प्रकार कुंदन एक तरफ तो रमा की लगी-लगायी नौकरी छुड़वा देता है और दूसरी तरफ उससे दुर्व्यवहार करता है। यह भी एक प्रकार की धोखा-घड़ी है।

विवाह के प्रति जागरूक नारी :

प्राचीन भारतीय व्यवस्था के अनुसार विवाह दो युवा दिलों को एक सूत्र हो जाने का नाम नहीं था, किन्तु दो परिवार का मिलन भी था। आज नर हो या नारी विवाह के प्रश्न पर परिवार के हस्तक्षेप को नकारते हैं। वे अपने परिवार से तुरंत बगावत कर सकतें है। इसका सुंदर चित्रण मन्नूजी ने 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में किया है। अमर अमला के पूछने पर कहता है-

'' इतना अवश्य है कि साथी मन लायक होना चाहिए। घरवालों की और से तय किये हुए विवाह में मेरा विश्वास नहीं।''[५४]

एक जमाने में शादी के पहले युवक-युवती का एक-दूसरे के साथ परिचय तक नहीं होता था। उनकी भेंट केवल प्रथम रात्रि में ही हो पाती थी। लेकिन आज की बात बदल चुकी है। आज कल तो विवाह से पहले युवक-युवती एक-दूसरे से परिचय करते हैं। यहाँ तक की कई दिनों तक साथ भी रहते है और एक-दूसरे को समझने की कोशिश करते हैं। विवाह से पहले के इन दिनों की मैत्री को 'कोर्ट शीप' का नाम दिया गया है। आज के युवाधन यह नहीं चाहते के उसके जीवन साथी का फैंसला कोई अन्य करे। 'एक इंच मुस्कान' की रंजना अमर से प्रेम करती है तथा अमर के साथ घर बसाना चाहती है। लेकिन रंजना की इस बात को उसके परिवार वाले अच्छा नहीं मानते। फिर भी रंजना उसकी परवाह नहीं करती। वह अमर के पास चली जाती है। समय आने पर वह परिवार के साथ रिश्ता तोड़ने पर उतर आती है। यहाँ पर रंजना एक नया दृष्टिकोण लेकर आनेवाली नारी है। वह अपने विवाह के लिए जागरूक है। ऐसी बात मन्नूजी की अन्य कहानियों मे भी चित्रित हुई है।

पश्चिमीकरण की नकल करती नारी :

भारत एक सुसंस्कृत देश है। सदियों से भारतीय संस्कृति विश्व विख्यात

है। लेकिन आज भारतीय जनता के मन-मस्तिष्क पर पश्चिमी देशों की सभ्यता का प्रभाव नजर आने लगा है। पश्चिमी देशों में नारी अपने शरीर को जितना ज्यादा दिखाती है वही सबसे अच्छा फैशन है। पश्चिमी देशों में नारी जिस तरह के कपड़े पहनती है उसी तरह के कपड़े भारत की नारी पहनने लगी है। पश्चिमीकरण का संकेत प्रेमचन्दजी ने 'गबन' उपन्यास में भी किया है। 'गबन' की रतन हिन्दुस्तानी नारी होते हुए भी आजसे लगभग ८० वर्षों पहले पर पुरूष से हाथ-मिलाती थी। यह बात हमारी भारतीय संस्कृति के लिए नयी थी। क्योंकि भारतीय नारी से पर पुरूष का हाथ स्पर्श होना भी पाप माना जाता था। लेकिन आज बात बदल गई है। राजेन्द्र यादवजी ने इस समस्या का चित्रण 'उनके उखड़े हुए लोग', 'सारा आकाश'और 'एक इंच मुस्कान' में भी किया है। 'उखड़े हुए लोग' का रावत कहता है-

" सच मानिए शरद बाबू इनमें से हर औरत चाहती है कि पुरूष की वासना भरी दृष्टि उसके शरीर को सहला-सहला कर गुद-गुदाती और रोमांचित करती रहें। कितना वह 'इन्वाइट' और आकर्षित कर पाती है, यही उसकी सफलता है "[५५]

मन्नूजी के 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में अमला कैलाश के बारे में कहती है -

" सिनेमा, पार्टी, नाच, कैबरे, पीना-पिलाना ये सब उसके व्यक्तित्व का एक बहुत बड़ा भाग बन चुके हैं, और मूझें उन सबमें अरूचि होते-होते अब नफरत हो चली है। जब कैबरे आर्टिस्ट पुरूषों की हजारों लोलुप, भूखी, जपलपाती आँखों के बीच नग्न प्राय खड़ी हो जाती है तो पता नहीं क्यों, मुझे लगता है कि जैसे किसी ने मुझे ही नंगा करके खडा कर दिया।"[५६] यह सब पश्चिमी देशों का अंधानुकरण ही है।

नारी के पूर्व प्रेम सम्बन्धों के कारण उसके वर्तमान जीवन में दरार की समस्या :

पाँचवे दायके की हिन्दी कहानी में नारी के विवाह पूर्व की इस मन: स्थिति: अनेक लेखकों ने चित्रित किया है। उषा प्रियंवदा ने 'मछलियाँ', निर्मल वर्माजी की 'परिन्दे' तथा मन्नूजी की 'यही सच है' और 'एक बार और' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

मन्नूजी की 'एक बार और' की बिन्नी अतीत और वर्तमान के प्रेम द्वन्द्व का शिकार होती है। बिन्नी कुंज नामक व्यक्ति से प्रेम करती है किन्तु कुंज की शादी मधु से हो जाती है। दूसरी ओर बिन्नी कुंज के प्यार में तह तक पहुँच जाती है। वह कुंज से शादी करना चाहती है। उसके माँ-बाप-भाई भी, उसके विचारों में खोये रहते है। बिन्नी हंमेशा कुंज की यादों में डूबी रहती है। लेकिन उसकी आँखे तब खुलती है जब कुंज उसकी वेदना को समझता ही नहीं। वह अपने आपको पूरी तरह कुंज की ओर से अलग पाती है तो महसूँस करती है-

"जो कोमल तन्तु उन दोनों को वर्षों से बाँधे चला आ रहा था, आज जैसे वह टूट गया है। उन दोनों के बीच 'कुछ' था, जो मर गया है।" [५७]

फिर से वह मन से कुंज को निकाल नहीं पाती। उसके घरवाले उसको दूसरी जगह शादी करने के लिए कहते है। वे लोग नन्दन को उसके पास भेजते हैं। बिन्नी न चाहते हुए भी नन्दन से मिलती है। यहाँ उसके मस्तिष्क में फिरसे द्वन्द्व की स्थिति पैदा होती है, एक ओर वह चाहती थी कि कुंज से शादी करे लेकिन पास बैठे नन्दन को देखकर सोचती है-

"शायद, रह-रहकर उसकी नजर नन्दन की बायीं कनपटी पर बने घाव के निशान पर चली जाती है। वह सोच रही है-किस चोट का होगा यह निशान, कैसे लगी होगी?" [५८]

मन्नूजी की दूसरी कहानी 'यही सच है' में भी इसी समस्याओं को उजागिर किया है। इस कहानी की दीपा अतीत और वर्तमान के प्रेम सम्बन्ध के द्वन्द्व में

जीवनयापन करती है। उसके सामने अतित का प्रेमी निशीथ है तो वर्तमान प्रेमी संजय है। कभी-कभी वह अपने अतीत को दोहराती हुई सोचती है-

" अठारह वर्ष की आयु में किया हुआ प्यार भी कोई प्यार होता है भला ! निरा बचपन होता है, महज पागलपन ! उसमें आवेश रहता है पर स्थायित्व नहीं ; गति रहती है पर गहराई नहीं। जिस वेग से आरंभ होता है, जरा सा झटका लगने पर उसी वेग से टूट भी जाता है।"[५९]

जब निशीथ उसके सामने आता है तो उसे ऐसा लगता है यही प्रेम सच्चा है। इस लिए वह निशीथ को लेकर सोचती है-

" तुम कह क्यों नहीं देते निशीथ, कि तुम आज भी मुझे प्यार करते हो, तुम मुझे सदा अपने पास रखना चाहते हो, जो कुछ हो गया है, उसे भूलकर तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो। कहदो निशीथ, कह दो।"[६०]

वह आगे भी सोचती है -

" प्रथम प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है, बाद में किया गया प्रेम तो अपने को भुलाने-भरमाने का प्रयास मात्र होता है।"[६१]

लेकिन जब संजय के पास होती है तो उसे ऐसा महसूस होता है -

" यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठा था, मिथ्या था... भ्रम था...।"[६२]

इस प्रकार मन्नूजी ने दीपा के माध्यम से अतीत और वर्तमान के द्वन्द्व में जीती नारी की समस्या को उजागिर किया है।

विवाहोपरान्त पत्नी और प्रेमिका की भूमिका में द्वन्द्व एवं तनाव की समस्या :

स्वतंत्रता के बाद की कहानियों में यह समस्या भी प्रमुख रूप से देखने

को मिलती है । क्योंकि नारी पत्नी और प्रेमिका की भूमिका का रूप निर्वाह करती दिखती है । विवाह के पूर्व नारी के प्रेमी से सम्बन्ध होने के कारण वह पति की इच्छाओं के साथ-साथ प्रेमी की इच्छाओं का खयाल रखती है । इस दृष्टि से मन्नू भंडारी की 'बाहों का घेरा' तथा 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' देखने लायक है ।

'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मो उक्त समस्या में उलझी हुई दिखती है । पति अपने बाहरी काम में व्यस्त रहता है । इस लिए उसे पूर्ण प्रेम की तृप्ति नहीं मिलती । पति की गैर हाजरी में अपना पूर्व प्रेमी याद आता है । जिसने उसे कहा था-

" कम्मो, तुम्हारे बिना मैं कितना अकेला हूँ, असहाय हूँ । हर क्षण उस दिन की प्रतिज्ञा करता हूँ जब तुम्हारी बाहों के घेरे में बँधकर मेरे सन्ताप दूर हो जायेंगे....।"[६३]

कम्मों अपने पति के सिर्फ रात के बिस्तर की सहभागी बनकर रह जाती है । वह पूरा दिन दु:ख, तनाव में व्यतित करती है । बच्चे के साथ दिल बहलाया करती है लेकिन उससे पुरूष जैसा स्नेह, तृप्ति नहीं मिल सकती । शम्मी आने से उसकी वह अपेक्षा कुछ कम होती है, लेकिन फिर भी वहीं तनाव पैदा हो जाता है । वह चाहती है कि जब रात को पति के पास जाय और उसे साफ- साफ कह दे कि-

" कहाँ इतनी देर कर देती ही हो ? यहाँ राह देखते देखते मर गये ।"[६४]

इस कारण वश उसकी असन्तुष्ता इतनी बढ़ जाती है कि वह सोचती है -

" आज उसके सामने न माँ का चहेरा उभर रहा है, न शैलेन का , न मित्तल का । सब चहेरे मिट गये; रह गई सिर्फ एक चाह दुर्दमनीय चाह एक ललक कि कोई हो, कोई भी- जो उसे कसकर अपने में समेट ले; जिसकी आँखो में प्यार हो, पूर्णता हो, कम्मों को पाने की पिपासा हो और अपने को पूर्ण बनाने के लिए वह कम्को को इतना भींचे, इतना भींचे कि उसकी हड्डियाँ

तक चरमरा जाएँ, उसका दम ही घुट जाय।''[६५]

'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' में भी इसी समस्या को लेखिका ने उभारा है। इस कहानी की रूप माँ के मरजाने के बाद किसी भी चीज का विरोध न करते हुए पिता के कहने पर वकील साहब से शादी कर लेती है। लेकिन वह ललित से शादी करना चाहती थी। शादी अपने प्रेमी के साथ न होने के कारण वह घुटन, संत्रास महसूँस करती है। कभी उसके मन में विचार आते है कि ललित के साथ वह भाग जाय। लेकिन पुरानी मर्यादा के कारण ऐसा नहीं कर पाती। इस प्रकार वह पत्नि एवं प्रेमिका की भूमिका निभाती है, लेकिन तनाव व द्वन्द्व के साथ।

विवाह के बाद पत्नी व प्रेमिका की भूमिका में निर्द्वन्द्व रूप से संबंध निर्वाह करती नारी :

मन्नूभंडारी ने अपनी कहानियों में से इस समस्या का भी सुंदर कलात्मक ढंग से चित्रिण किया है। 'ऊँचाई' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। इस कहानी की शिवानी अपने विवाह पूर्व के प्रेमी से भी सम्बन्ध रखती है और पति से भी। वह प्रेमी से इसलिए सम्बन्ध रखती है कि वह उसके कारण अविवाहित है। और पति उसका वर्तमान जीवन है। कभी-कभी पति क्रोध व दु:खी होता है। लेकिन शिवानी पति की परवाह न करते हुए प्रेमी को नि:संकोच शरीर समर्पित कर देती है। वह अपने प्रेमी अतुल को यह कहती है -

'' आदमी छोटा अपने मन के छोटेपन से होता है, दूसरे का बड़प्पन किसी को छोटा नहीं बनाता, बन भी नहीं सकता। मेरे लिये जैसे, शिशिर, वेसे ही तुम हो।''[६६]

शिवानी तो यहाँ तक भी नहीं ड़रती कि पति को यह रिश्ता-मालूम हो या न हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। जब शिवानी को प्रेमी के साथ सोते देख लेने के बाद पति के आक्रोश करने पर भी वह साफ-साफ कह देती है -

'' उस पर (अतुल) व्यर्थ लाँछन लगाने की आवश्यकता नहीं, जो कुछ

कहना है मुझे कहो । मैं तुम्हारी घृणा, आक्रोश सभी कुछ सहने को तैयार हूँ ।''[६७]

उसका पति उसे सब कुछ बता देने के लिए बाध्य करता है, लेकिन शिवानी बिना डरे कहती है -

'' शीनू तुम्हारी है और केवल तम्हारी ही । पति के रूप में तो मैं किसी की कल्पना भी नहीं कर सकती हूँ, अतुल की भी नहीं । तुम्हें लेकर मन को कोना-कोना भरा हुआ है कि इस में कोई और कहाँ से आयेगा भला... ऐसी बात भी तुम्हारे मन में क्यों आती है? अतुल अपनी सीमायें जानता है । जो उसका नहीं है ; उसे पाने की लालसा भी कभी नहीं करता । मेरे जीवन में जो तुम्हारा स्थान है, उसे कोई भी नहीं ले सकता, लेना तो दूर, उस तक कोई पहुँच भी नहीं सकता । किसी के कितने ही निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ पर कोई नहीं आ सकता ।''[६८]

इस प्रकार वह प्रेमिका और पत्नी का रूप निर्द्वन्द्व रूप से निभाती है । उस औरत के जीवन में तनाव भी नहीं है ।

नारी स्वतंत्रता की समस्या :

आज नारी के अपने विचार-विमर्श हैं । वह पश्चिमी चिन्तन से काफी प्रभावित है । नारी की स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं है कि वह पारिवारिक अथवा सामाजिक बंधनों से मुक्त हो जाय । बल्कि नारी स्वतंत्रता का मतलब है 'अपने विचार व अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देना ।' स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों ने अपेक जगह पर नारी स्वातंत्र्य विचारधारा को प्रमुख विषय बनाया । मन्नू भंडारी ने भी अपने खुद के जीवन में भी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की बात को स्वीकारा है । वह अपने उपन्यास व कहानियों में उक्त समस्या का चित्रण भी किया है ।

'एक इंच मुस्कान' की अमला परित्यकता होने के बाद भी सामान्य नारियों की भाँति चुप-चाप शांत बैठे रहने में नहीं मानती। वह स्वतंत्र हो जाने से बेहद खुश है। वह अमर को कहती है-

''इस घटना के बाद ही मैंने पढ़ाई की, संगीत सीखा... घूमना फिरना सीखा, स्वतंत्र रूप से कुछ सोचना सीखा, लोगों से मिलना-जुलना सीखा, यों समझ लो कि नयी जिन्दगी पायी।''[६९]

'स्वामी' उपन्यास की मिनी भी अपनी स्तंत्रता के लिए माँसे बहुत घुटन महसूस करती है जैसे-

''मामा के पास तरह-तरह के लोग आते हैं, चर्चा बहस करते हैं , करें पर सबके बीच मिनी क्यों जाके बैठे ? और मिनी का तर्क है कि वह क्यों न जाये, जरूर जायेगी। सोचो तो भला यह भी कोई बात हुई? बड़ी हो गयी, इसलिए घर के अन्दर बन्द होकर बैठ जाये।''[७०]

'आपका बंटी' की शकुन तो अपने अहं को बचाने के लिए अपने पति से तलाक लेने से भी नहीं हिचकिचाती। साथ-साथ अपने बच्चे बंटी को भी दाव पर लगाती है। वह डॉ. जोशी के साथ फिर से विवाह कर लेती है। मन्नू जी की अधिकांश कहानियों में नारी अपने इस व्यक्तिस्वातंत्र्य को पाकर स्वयं को सार्थक अनुभव करती हैं, लेकिन मन्नूजी की कुछे कहानियों में उसकी उस पीड़ा का बोध ही है जो उसे अपने 'स्व' को खोकर झेलना पड़ता है। जैसे 'आपका बंटी' की शकुन, 'नयी नौकरी' की रमा, 'बंद दराज़ो के साथ' की मंजरी, नारी स्वंत्रता का यही स्वर इन कथाओं में उजागर हुआ है।

'ऊँचाई' कहानी की शिवानी अपने पति एवं प्रेमी को भी खुश रखती है। वह पत्नी पर पति के अधिकार को चुनौती दी है। वह अपने पति को कहती है- ''शीनु तुम्हारी है और केवल तुम्हारी ही। पति के रूप में तो मैं किसी की कल्पना भी नहीं कर सकती हूँ, अतुल की भी नहीं।... ऐसी बात भी तुम्हारे मन क्यों आती है ? उसे पाने की लालसा भी कभी नहीं करता। मेरे जीवन में जो तुम्हारा स्थान, उसे कोई भी नहीं ले सकता। किसी के कितनी ही

निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ कोई नहीं आ सकता।''[७१]

इस प्रकार वह रूठे हुए पति को मना कर दोनों का साथ निभाने में कामयाब होती है। ऐसा करने में उसे जरा सी भी लज्जा महसूस नहीं होती। मन्नू भंडारी के उपन्यास एवं कहानियों में नारी स्वतंत्र निर्णय लेती हुई भी दिखाई देती है, जैसे- 'एक इंच मुस्कान' की रंजना, 'आपका बंटी' की शकुन। कहानियों में 'बंद दराज़ो के साथ' की मंजरी, 'जीती बाजी की हार' की मुरला, 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी, 'ईसा के घर इन्सान' की एंजिला आदि।

नारी ही नारी की दुश्मन :

अक्सर नारी का सबसे बड़ा दुश्मन पुरुष माना जाता है पर इस बात की मैं आलोचना करना चाहूँगा कि नारी का सबसे बड़ा दुश्मन नारी ही है। इसकी सीमा यहाँ तक पहुँचती है कि कभी-कभी बेटी माँ के प्रति, माँ-बेटी के प्रति, बहन-बहन के प्रति असहिष्णु हो जाती है। सास-बहू, ननद-भाभी के तो कितने ही किस्से मैं आपको भूतकाल, वर्तमान काल और आनेवाले भविष्य में मिलते ही रहेंगे, जिसमें नारी-नारी के साथ लड़ती मिलेगी। मन्नू भंडारी ने भी इस समस्या को अपने कथा साहित्य में उद्घाटित किया है। मन्नू जी ने इस समस्या को 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी' उपन्यास तथा 'कील और कसक', 'बाहों का घेरा', 'दीवार, बच्चे और बरसात', 'सजा', 'रानी माँ का चबूतरा', 'नकली हीरे' आदि कहानियों में किया है।

'स्वामी' उपन्यास की मिनी की माँ यह नहीं चाहती कि वह बी.ए. करे। मिनी की वाक्‌चातुर्यता भी उसे पसंद नहीं है। वह नरेन्द्र से कहती है-

''तुम किताबे-बिताबें तो इतनी दे जाते है बिनी को पढ़ने के लिए, मगर यह गजभर की जबान भी काबू में रखना सिखा दो तो भला हो इसका। कैसी कैंची की तरह...।''[७२]

मिनी जब ससुराल जाती है तो वहाँ का वातावरण देखने लायक है वह सुबह से उठी तो ''रसोई के बाहर ही सास-ननद और देवरानी में खुसर-पुसुर चल रहा था उसे देखते ही तीनों एकाएक चुप हो गयी और तीनों की नजरें एक साथ ही उस पर जम गयी। क्षण भर को मिनी सिट-पिटा गयी...उनकी बातों से अपमान और क्रोध से मिनी का मन सुलग उठा उसने जिस पर चुभती नजरों से देवरानी को देखा वही उसे चुप कराने को काफी था मिनी उठकर अपने कमरे में आ गयी उस समय भरसक रोके हुए आँसू कमरे में आते ही छलछला आये।''[७३]

'एक इंच मुस्कान' का अमर जब अमला नामक स्वछंद प्रकृति वाली महिला में रुचि लेने लगा तो उसकी पत्नी रंजना उसे कहती है-

''तुम साफ-साफ क्यों नहीं कह देते कि तुम अमला से प्यार करने लगे हो ? इसलिये अब मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती, यह घर अच्छा नहीं लगता, कुछ भी अच्छा नहीं लगता।''[७४]

'कील और कसक' की रानी शेखर की पत्नी के पिटने पर आनंद महसूस करती है जैसे-

''तो आज पड़ गयी बहू पर मार, परम संतोष से उसका मन भर गया और वह पूरी तरह सतर्क होकर उधर की आहटें लेने लगी।''[७५]

'दीवार, बच्चे और बरसात' की अधिकतर स्त्रियाँ इकट्ठी होकर नयी किरायेदारिन पर टीका करती है-

''अरे यह सब तो नाटक होगा नाटक, हमारे पुरखे तिरिया चरित्तर की जो महिमा बखान गये सो झूठी नहीं है मैं तो कहूँ पहले से ही किसी से लगी बैठी होगी मरी, बस बहाना चाहिए था।''[७६]

'एक बार और' बिन्नी कुंज से नफरत करती है। किन्तु जब मधु कुंज के जीवन में आती है तो नारी सहज ईष्या प्रकट होती है, इसलिए तो उसकी सखि बिन्नी को कहती है-

''क्यों अपने को धोखा दे रही हो, बिन्नी, अब तेरे संबंध का आधार

प्यार नहीं, प्रेस्टीज है, कुचला हुआ आत्मसम्मान। तुझे कुंज नहीं मिला तो तू अपने को बरबाद करके भी यह संभव नहीं होने देगी कि वह मधु को मिले।''[७७]

'नकली हीरे' की बड़ी बहन छोटी बहन की बुराई कर रही है मिसेज गुजराल से वह कहती है-

''सोच रही थी मैं खुद उसे... प्रैस्टीज और पोजीशन का कुछ तो ख्याल रखना ही पड़ता है अब नौकर, ड्राइवर, सबके सामने वह थर्डक्लास से उतरती या सेकेन्ड से ही उतरती मुझे तो बड़ा आकवर्ड लगता।''[७८]

किन्तु अपनी बहन को सखी के सामने इस प्रकार जलील करना आकवर्ड नहीं लगता। इस प्रकार ब्लड-रिलेशन में भी नारी के प्रति नारी का उपेक्षा भाव रहता है।

नौकरी पेशा महिलाओं में भी आपसी ईर्ष्या द्वेषभाव होता है। 'बंद दराजों का साथ' की मंजरी दूसरा विवाह तो कर लेती है लेकिन साथिनी महिलाओं की वजह से अपनी नौकरी छोड़ देती है-

''क्योंकि साथिनी की नजरों में झाँकती हिकारत उससे बरदास्त नहीं होती थी।''[७९]

'सजा' की आशा की चाची भी उससे दुश्मन सा बर्ताव करती है। 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी नारियों की ईर्ष्या का शिकार होती है। काफी तो उसे चुडैल एवं कसाईन कहने से भी नहीं चूकती। वह गुलाबी से इतना नफरत करती है कि उसका कोई नाम ले तो भी झल्ला उठती है-

''नाम मत ले उस चुडैल का मेरे सामने वह कोई माँ है ? कसाईन है कसाईन।... पर वह तो हेकडीवाली ऐसी कि कभी उधर मुंह भी नहीं करती। भगवान करे उसका सत्यानाश हो जाए। सारी बस्ती पर किसी दिन पाप का देगी।''[८०]

इस प्रकार इस कहानी में मन्नू जी ने उपर्युक्त समस्या को बड़ी गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया है।

नारी की आभूषण-प्रियता की समस्या :

पौराणिक काल से नारी सौन्दर्यप्रिय रही है । इसलिए आभूषणों के प्रति उनकी ललक स्वाभाविक है । जिस प्रकार कविता छंदों, अलंकारों से और अधिक कलात्मक बनती है उसी तरह नारी आभूषणों से और अधिकसुन्दर लगती है । लेकिन अधिक लालसा एक सामाजिक समस्या को जन्म देती है । प्रेमचन्द ने नारी की इसी समस्या को केन्द्र में रखकर 'गबन' उपन्यास का सृजन किया है । उसमें जालपा नामक स्त्री के द्वारा उपर्युक्त समस्या की गहनतम् चर्चा की है । आभूषण प्रेम के कारण कभी-कभी और समस्याएँ भी पैदा होती हैं । इसीलिए तो 'गबन' उपन्यास का देवीदीन इस समस्या की टिप्पणी करता हुआ रमानाथ को कहता है-

''सब घरों का यही हाल है । जहाँ देखो हाय गहने ! हाय गहने ! गहने के पीछे जान दे दें, घर के आदमियों को भूखा मारें, घर की चीज बेचें । और कहाँ तक कहूँ, अपनी आबरू तक बेच दें । छोटे-बड़े अमीर-गरीब सबको यही रोग लगा हुआ है ।''[८१]

मन्नू जी ने कहीं-कहीं पर आभूषण प्रेम का विरोध किया है तो कहीं-कहीं पर आभूषण प्रेम से लगाव रखनेवाली नारियों का चित्रण किया है। 'नकली हीरे' कहानी इन्दु आभूषण पर जोर नहीं देती बल्कि उसकी बहन सरन आभूषण के प्रति अटूट लालसा रखती है । और नये-नये गहने खरीदती भी है । वह अपनी बहन के गले में मात्र मंगलसूत्र देखकर दुःखी हो जाती है । वह जौहरी के घर ले जाकर उसे गहने दिलवाती है लेकिन इन्दु आभूषणों के प्रति अरुचि प्रकट करती है वह कहती है-

''मैं सचमुच ही नहीं पहनती दीदी, लेकर क्या करूँगी ? तुम जरा यह सब देखो जितने में मैं सामनेवाली दुकान से होकर आती हूँ ।''[८२]

हालाँकि सरन सत्तर हजार वाला गहना खरीदती है वह कहती है- ''यहाँ तो मन पर चढ़ने की बात है, चढ़ गया तो ले ही लूँगी ।''[८३]

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की गुलाबी को दो बच्चे थे । एक दिन

उसकी बेटी के हाथों में हरी चूड़ियाँ चमकती देखकर कहती है कि कहाँ से लायी हो ? पता चला कि रामेसुर को दी है। तब स्वाभिमानी गुलाबी बच्ची के मन की ललक को पहचानकर उसके लिए चूडियाँ लाकर दी। इस प्रकार छोटे - बड़ों में भी गहने के प्रति अटूट लगाव होता है। मन्नू जी की 'अभिनेता' की रंजना आभूषणों से अति लगाव नहीं रखती। उसके पीछे उसकी सात्विकता भाव छिपा था। ऐसी महिलाएँ चाहे अमीर हों या गरीब आभूषणों से कम लगाव रखती है। जैसे-

"रंजना का यह सारा साज सिंगार, नाच गाना, अभिनय अपने काम तक ही सीमित रहता, उसका अपना रहन-सहन बिल्कुल ही और था। रहती तो एकदम सादे ढंग से।"[८४]

इस प्रकार मन्नू जी की नारी गहनों के प्रति काफी उदासीन है। लेकिन गहनों की समस्या की ओर उनका संकेत जरूर है। इसलिए कहीं उनकी नारी गहनों के प्रति लगाव तो कहीं अलगाव रखती है।

दलित विषयक सामाजिक समस्याएँ :

दलितों समाज पर होनेवाले अत्याचार एवं आतंक की समस्या :

दलितों के उपर अत्याचार एवं आतंक फैलाना आज की बात नहीं है। सदियों से दलितों पर अत्याचार सवर्ण जाति द्वारा किया जाता है। मन्नूजी ने इस समस्या का चित्रण 'महाभोज' उपन्यास में किया है। हाल ही में गोहाना में दलितों के अनेक घर उच्चवर्ण द्वारा जलाये गये थे। देश के अनेक भागों में दलितों की बस्ती आज भी उजाड़ी जा रही है। आज का युग कोम्प्युटर का युग है फिर भी दलितों का कत्लेआम एवं झोपड़पट्टी को जलाया जाता है। 'महाभोज' में भी हरिजनों की झोपड़ियों जलायी जाती है। 'महाभोज' के दलित लोग भी आतंक के सायें में जी रहे है। वे मनुष्य के रूपे कम, वोटर के रूप में अधिक नजर आते है। अगर राजनीति के बाहुबली लोग वोट नहीं देते तो उन्हें तरह-

तरह से प्रताड़ित किया जाता है। वे इतने आतंकित होते है वे गवाहीं भी नहीं दे सकते। पुलिस भी उसे प्रताड़ित करती है। 'महाभोज' में उसी आतंक का यथार्थ चित्रण मिलता हैं। जैसे-

" गाँव की सरहद से जरा हटकर जो हरिजन टोला है, वहाँ कुछ झोपड़ियों में आग लगा दी गई थी, आदमियों सहित। दूसरे दिन लोगो ने देखा तो झोपड़ियाँ राख में बदल चुकी थीं और आदमी कबाब में। लोग दौड़े-दौड़े थाने पहुँचे; पर थानेदार साहब उस दिन छुट्टी पर थे, और जो दो लोग वहाँ ड्यूटी पर थे उन्होंने यह कहकर बात टाल दी कि थानेदार साहब के आने पर ही मौके पर आएँगे और तहकीकात होगी। इसके बाद पता नहीं इन गाँव वालों को कौन-सा जहरीला साँप सूँघ या कि सबके मुँह सिल गए। बस सबकी साँसों के साथ निकला हुआ एक गुस्सा, एक नफरत-भरा तनाव बनकर हवा में यहाँ से वहाँ तक सनसनाता रहा।"[८५]

बिंदा दलितों के आतंक विरोध में सार्वजनिक वक्तव्य देता है उसमें शासित लोंगो द्वारा किये जानेवाला अत्याचार का यथार्थ चित्रण है -

" अरे दा साहब; काहे यह नौटंकी कर रहे हो यहाँ ? हरिजनों को जिन्दा जला दिया गया और आपकी सरकार और आपकी पुलिस देखती है। हुआ आज तक कुछ ?"[८६]

बिंदा के इस वक्तव्य में दलितो की दुर्दशा का नग्न चित्रण है। दलित इतने आतंकित होते है कि वे गवाही भी नहीं दे सकते। बिंदा उसके बारे में यथार्थ कहता है-

" कौन देगा गवाही... मरना है किसी को शिनाख्त करके? चार दिन यहाँ आकर रह लीजिए... पता चल जाएगा कि कैसा आतंक है।"[८७]

जब जिन्दा पूरे प्रमाण जुटा लेता है, वह दिल्ली जाकर जन प्रतिनिधियों से व सरकार के सामने देना चाहता है तो प्रशासन न्याय का गला घोंट देता है। यहाँ फिल्मों की कथाएँ जैसा हूबहू होता है। बिसेसर की हत्या का झूठा आरोप लगाकर बिंदा को ही गिरफ्तार कर लिया जाता है। इस प्रकार मन्नूजी ने दलितों

के ऊपर होते आतंक, अत्याचार, दमन आदि का वास्तविक चित्रण किया है।

समाज में दलितों की उपेक्षा की समस्या :

आज देश की स्वतंत्रता को मिले पचपन साल हो चुकने पर भी दलितों की उपेक्षा की जा रही है। हमारा समाज जड़ संस्कारों से ग्रसित है। नरसिंह महेता, कबीर, डॉ.आम्बेड़कर, महात्मा गाँधी आदि ने दलितों के प्रति सहानुभूति प्रकट की थी। कबीर ने तो कहा था -

'जाति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि होई।'

फिरभी रूढ़ियों से ग्रस्त समाज अभी तक पूर्ण रूप से उपर नहीं उठ सका। दलितों की उपेक्षा अधिकतर गाँव में ज्यादा होती है। मन्नूजी ने भी हरिजनों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है। उन्होंने 'महाभोज' में दलित शब्द का प्रयोग न करके दलितों की विविध समस्याओं को उजागर किया है। दलितों के सम्बन्ध में सामन्ती सोच और संस्कार अब भी विद्यमान है। दलितों की चेतना और उनके जनतान्त्रिक मानवीय अधिकारों को स्वीकार करने के अट्ठावन साल भी कम पड़ रहे हैं। आज दमन और शोषण के तरीके बदल गए हैं। अब वे स्वयं अन्याय न करके असामाजिक तत्वों, पुलिस एवं राजनीतिज्ञों की मदद लेते है। एक स्थिति में निश्चित रूप से परिवर्तन आया कि आर्थिक रूप से संपन्न दलितों के साथ अन्याय न के बराबर है। लेकिन दूर-दराजों के देहातों में आज भी स्थिति वैसी है। किन्तु यह स्थिति बहुत दिनों से चल रही है। जोरावर जैसे पात्र हर क्षेत्र में मिलेंगे। हर सत्ताधारी पक्ष ऐसे व्यक्तियों का उपयोग कर रहे है। 'महाभोज' का जोरावर कहता है-

"इसमें जिद की बात क्या हुई, दा साहब ? इन हरिजनों के बाप-दादे हमारे बाप-दादों के सामने सिर झुकाकर रहते थे। झुके-झुके पीठ कमान की तरह टेढ़ी हो जाती थी। और ये ससुरे सीना तानकर आँख में आँख गाड़कर बात करते है- बरदाश्त नहीं होता यह सब हमसे।"[८८]

आज भी उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों में दलितों की उपेक्षा अनवरत दिखाई देती है। गुजरात के कई जगह के गाँवों की स्कूलों में आज भी दलित शिक्षक को एक ही मटके से पानी पीने का अधिकार नहीं है। गाँवों में दलित चारपाई या कुरशी पर बैठ नहीं सकता। देश एक्कीसवीं सदी में जा रहा है, लेकिन दलितों की उपेक्षा हजारों वर्षों से जो हो रही है उसमें परिवर्तन जरूर आया है लेकिन पूर्ण रूप से इस मानसिकता को सवर्ण समाज दूर नहीं कर पाया। दलितों के गाँव में आज भी आग लगायी जाती है। 'महाभोज' में मन्नूजी इसी समस्या को चित्रित करती है। आज से २५ वर्ष पूर्व लिखा गया उपन्यास आज भी प्रासंगिक है। क्योंकि हाल ही में गोहाना गाँव में अनेक घर जलाये गये। यह नरसंहार, यह आगजनी न जाने कब बंद होगी! दलितों का उद्धार कब होगा? उनको पूर्ण रूप से अधिकार कब मिलेगा? आदि प्रश्न दलितों के लिए मुँह फाड़े खड़े हैं। दलितों की समस्याओं को मुन्शी प्रेमचन्द ने जरूर उठायी थी, लेकिन आज 'क़फ़न', 'ठाकुर का कुआँ', 'रंगभूमि' आदि साहित्यिक रचनाएँ निरर्थक साबित होती है। प्रेमचन्द ने काफि महेनत की थी दलितों की जागृति के लिए। भारतीय स्वाधीनता और संविधान दलितों के लिए सबसे बड़े वरदान सिद्ध हुए। जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन ने भी दलितों को एक नया जीवन और नयी आशा प्रदान की। भारत समाज में जड़ संस्कार काफि गहरे है। दलित साहित्य की चर्चा मराठी साहित्य में १९५६ में व्यापक धरातल पर हुई । १९८० में जगदीश द्वारा लिखा गया 'धरती धन न अपना' में दलित जीवन, दलितों की दूर्दशा व संघर्ष-उपेक्षा का यथार्थ चित्रण मिलता है। लेकिन इस उपन्यास में लेखक ने दलित शब्द का प्रयोग नहीं किया। मन्नूजी का 'महाभोज' उपन्यास दूसरे रूप से हमारे सामने आता है। 'महाभोज' के दलित अधिक संघर्ष एवं अपने अधिकार के लिए बलिदान और आर-पार की लड़ाई लड़ने तैयार है। वह समानता के संघर्ष में कोई भी मूल्य चुकाने तैयार है। इस संघर्ष में बिसू बलिदान देता है और बिन्दा यातनाएँ सहता है, जेल जाता है, लेकिन उनका आत्मबल टूटता नहीं है। यहाँ मन्नूजी ने 'दलित'

शब्द का प्रयोग न करके 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया है । बिसेसर और बिन्दा नयी चेतना के प्रवर्तक है । दमन और उपेक्षा के विरूद्ध संघर्ष के लिए कोई भी बलिदान देने को तैयार है । 'महाभोज' के दलित लोग आज भी आतंक के सिरहाने बैठे हुए नज़र आते है । दा-साहब हीरा को गाड़ी में बिठाता है तो वह आश्चर्य चकित हो उठता है । उसका चित्रण करते हुए मन्नूजी ने लिखा है-

''गाड़ी तक आकर हीरा बेचार हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । कहा उसने कुछ नहीं, पर बे तरह कातर, बेहद कृतज्ञ हो आया था । दा-साहब खुद उसके घर आये ऐसा मान तो उसे जीवन में कभी मिला ; न आगे ही कभी मिलेगा । लेकिन दा साहब ने उसे गाड़ी में बैठने को कहा तो एक-दम हकबका गया । जिन्दगी में कब नसीब हुआ है उसे गाड़ी में बैठना और वह भी दा-साहब की गाड़ी में । न ना करते बन रहा था, न बैठते बन रहा था । पर दा-साहब ने कन्धा पकड़े-पकड़े एक तरह से भीतर की और ठेल ही दिया । बेहद सकुचाते हुए, सिमटकर एक कोने में बैठ गया बेचारा-बगल में दा-साहब ।''[८१]

हालांकि गाड़ी में बिठाने के पीछे भी राजनीति थी । इस प्रकार यह उपन्यास एक-एक दलितों की दुर्दशा का यथार्थ दस्तावेज है । इस में हरिजनों के शोषण, दमन, अत्याचार का हूबहू चित्रण किया है ।

*

संदर्भ ग्रंथ :

१.डॉ. अजमेर काजल- उपन्यासकार राजेन्द्र यादव (समाज-शास्त्रीय अध्ययन), पृ.५

२.वही ,पृ.१४

३.हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र कोश, १५२

४.निराला - (रागविराग) कुकुरमुत्ता ,संपादक- रामविलास शर्मा, पृ.१४५

५.डॉ. अजमेर काजल- उपन्यासकार राजेन्द्र यादव (समाज-शास्त्रीय अध्ययन),

पृ.११८

६.वही ,पृ.११८

७.डॉ. रमणभाई पटेल-सातवें दशक के हिन्दी उपन्यास ,पृ.१५

८.मन्नू भंडारी- आपका बंटी -, पृ.३१-३२

९.मन्नू भंडारी- नायक, खलनायक,विदूषक ,(बंद दराज़ो के साथ), पृ.३३९

१०.मन्नू भंडारी- नायक, खलनायक,विदूषक ,ऊँचाई : पृ.३४२

११. वही - सजा , पृ.२५६

१२. वही , पृ.२५७

१३.वही , पृ.२५८

१४.वही , शायद, पृ.४३२

१५.वही, चश्में , पृ.१७५

१६.बंद दराज़ों के साथ, पृ.३४१

१७.वही , हार , पृ.१६२

१८. मनुस्मृति से उद्धृत

१९. मन्नू भंडारी- नायक खलनायक विदूषक, एक कमजोर लड़की की कहानी , पृ.६९

२०.वही, पृ.७४

२१.वही, पृ.८१

२२.वही, पृ.८१-८२

२३.मन्नूभंडारी- आपका बंटी - पृ.३१

२४.मन्नूभंडारी- आपका बंटी - पृ.३२

२५. डॉ. पारुकान्त देसाई- द्रष्टव्य : युग निर्माता प्रेमचंद तथा कुछ अन्य निबंध

से उद्धृत

२६.मन्नूभंडारी - स्वामी- पृ.८१,८२

२७.वही, पृ.८१

२८.वही , पृ.८२

२९.मन्नूभंडारी एवं राजेन्द्र यादव- एक इंच मुस्कान, पृ.२१८

३०.वही ,पृ.२९५

३१.मन्नूभंडारी-आपका बंटी - पृ.३१

३२.वही , पृ.१९१

३३. वही, पृ.३३

३४.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ.१४०-१४१

३५.वही , पृ.२१०

३६.मन्नू भंडारी- नायक खलनायक विदूषक, अकेली, पृ.११९

३७.वही , बाहों का घेरा, पृ.२८२

३८.मन्नू भंडारी- आपका बंटी ,पृ.३१

३९.वही , पृ.२३

४०.वही , पृ.३८

४१.वही ,पृ.३२-३३

४२.डॉ. शकुन्तला गर्ग-महिला उपन्यासकार : मूल्य चेतना ,पृ.१९

४३.मन्नू भंडारी- नायक खलनायक विदूषक,ऊँचाई- पृ.३५५

४४.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव- एक इंच मुस्कान,पृ.१९९-२००

४५.वही ,पृ.२०२

४६.मन्नू भंडारी - महाभोज , पृ.४३

४७.वही ,पृ.३४

४८.वही, स्वामी-पृ.५९-६०

४९.वही, स्वामी, पृ.६०

५०. वही, नायक खलनायक विदूषक,आते जाते यायावर, पृ.४१५

५१.वही ,पृ.४१५

५२.वही,जीती बाजी की हार, पृ.४१

५३.वही, ईसा के घर इन्सान, पृ.१०७

५४.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव- एक इंच मुस्कान,पृ.२६

५५.राजेन्द्र यादव-उखड़े हुए लोग,पृ.३७५

५६.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव- एक इंच मुस्कान,पृ.८५

५७.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक, विदूषक- एक बार और,पृ.३२०

५८.वही,पृ.३२६

५९.वही,यही सच है , पृ.२६४

६०.वही,पृ.२७२

६१.वह,पृ.२७४

६२.वही,पृ.२७६

६३.वही, बाहों का घेरा,पृ.२७९

६४.वही ,पृ.२८६

६५.वही ,पृ.२८६

६६. वही, उँचाई, पृ. ३५१

६७. वही, उँचाई, पृ. ३५३

६८. वही, उँचाई, पृ. ३५४-३५५

६९. मन्नू भंडारी-राजेन्द्र यादव- एक इंच मुस्कान, पृ. २५

७०. मन्नू भंडारी- स्वामी, पृ. ०३

७१. वही, नायक, खलनायक, विदूषक,यही सच है, पृ. ३५४-३५५

७२. वही, स्वामी, पृ. ०६

७३. वही, पृ. ४३

७४.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव-एक इंच मुस्कान, पृ.१६५

७५. मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक,विदूषक, कील और कसक, पृ. ९८

७६. वही, दीवार बच्चे और बरसात, पृ.८८

७७. वही, एक बार और, पृ. ३२१

७८. वही, नकली हीरे, पृ. १८१

७९. वही, बंद दराज़ों का साथ, पृ. ३४०

८०. वही, सजा, पृ. २१२

८१. प्रेमचंद- गबन, पृ. १०३

८२. मन्नू भंडारी- नायक, खलनायक, विदूषक, नकली हीरे, पृ.१४४

८३. वही, पृ. १८८

८४. वही, अभिनेता, पृ. ३१

८५. मन्नू भंडारी- महाभोज, पृ. ०७

८६. वही, पृ.६६

८७. वही, पृ.६६

८८. वही, पृ. १४०

८९. वही, पृ. ६३